लघु जिनवाणी

(अभिषेक-शान्तिधारा नित्य-पूजन विधि)

पावन प्रेरणा

बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	लघु जिनवाणी
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
पावन प्रेरणा	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
प्रसंग	:	**पहाड़ी पंचकल्याणक 8-13 मई 2022**
संस्करण	:	द्वितीय, 1100 प्रतियाँ
प्राप्ति स्थान	:	राकेश जैन दिगंबर हार्डवेयर पहाड़ी सम्पर्क–6263726871, 9754345865
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

स्व० श्री कोमलचंद जी की पुण्य स्मृति में श्रीमती शीला बाई जैन, पुत्री–सुनीता जैन राकेश–सुमन, उमेश–मधु, चक्रेश–मंजू, अंशुल–पूर्वी, आयुष–समीक्षा, अंकुश, नयन, साहिल, आरुषी जैन एवं समस्त दिगंबर परिवार

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत कृति 'लघु जिनवाणी' के प्रेरणास्रोत अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत परमपूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज ने करके महान् उपकार किया है। प्रस्तुत कृति में मुनिश्री के द्वारा रचित पूजाएँ एवं भक्तियाँ व भावनाएँ सम्मिलित हैं।

यह कृति उन श्रावकों के लिए है जो पूजा तो करना चाहते हैं परन्तु पूजन के क्रम आदि की जानकारी के अभाव में वे संकोच करके रह जाते हैं या समयाभाव के कारण नहीं कर पाते हैं। यह कृति श्रावक के षडावश्यक कर्तव्य में प्रथम कर्तव्य को पूर्ण करने में सहयोगी बनेगी। पाठशाला में बच्चों को पूजन संस्कार देने में भी यह कृति उपयोगी सिद्ध होगी। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा.ब्र. संजय, मुरैना

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
1. मंगल भावना	5
2. मंगलाष्टक	6
3. अभिषेकपाठ (संस्कृत)	9
4. अभिषेक पाठ (हिन्दी)	14
5. अभिषेक स्तुति	17
6. अभिषेक गीत	18
7. वृहद् शान्तिधारा	19
8. अभिषेक आरती	22
9. विनय पाठ	23
9. पूजन पीठिका	25
10. लघु पूजन पीठिका	30
11. समुच्चय पूजन	33
12. नवदेवता पूजन	37
13. अर्घ्यावली-महाऽर्घ्य-शान्तिपाठ-विसर्जन	41
14. महाऽर्घ्य-शान्तिपाठ-विसर्जन (प्राचीन)	51
15. श्री शान्तिनाथ पूजन	54
16. श्री पार्श्वनाथ पूजन	61
17. श्री महावीर पूजन	65
18. श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली पूजन	72
19. श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ पूजन	76
20. श्री पंच बालयति तीर्थंकर पूजन	81
21. आचार्य श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन	86
22. मुनि श्री सुव्रतसागर जी पूजन	92
23. आरती-श्री पंचपरमेष्ठी	96
24. आरती-श्री चौबीसों भगवान	97
25. आरती–श्री आदिनाथ स्वामी	98
26. आरती–श्री शान्तिनाथ स्वामी	99
27. आरती–श्री पार्श्वनाथ स्वामी	100
28. आरती–श्री महावीर स्वामी	101
29. आरती–आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज	102
30. आरती–मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज	103
31. लघु प्रतिक्रमण	104
32. आलोचना पाठ (नवीन)	106
33. समाधि भावना	108
34. सुप्रभात स्तोत्र (भावानुवाद)	109
35. दर्शन पाठ (संस्कृत)	110
36. दर्शन पाठ (दोहा)	111
37. भक्तामर स्तोत्र	112
38. भक्तामर भाषा	121
39. महावीराष्टक	125
40. महावीराष्टक भावानुवाद (चौपाई)	127
41. गोम्मटेश अष्टक	128
42. गोम्मटेश अष्टक भावानुवाद (चौपाई)	129
43. श्री छहढाला	130
44. नवदेवता पूजन (अंग्रेजी)	145

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहन्ताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोये सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमंत्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिन-शासनोन्-नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया-राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]
श्रीमन्-नम्र-सुरा-सुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्-पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम् -भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्य-नुगतास्-ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगि-जनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥१॥
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्त-ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्-युक्तोऽपवर्ग-प्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्य-मखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विध-ममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥२॥
नाभेयादि - जिनाः प्रशस्त-वदनाः-ख्याताश्-चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति-विष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशतिस्-
त्रैकाल्ये प्रथितास्-त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥३॥
ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसां वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महा-निमित्त-कुशलाश् चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञान-धरास्-त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥४॥

ज्योतिर्-व्यन्तर-भावनाऽ-मरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥५॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृति-मही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेर्-हताम्।
शेषाणा-मपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्-यार्हतो,
निर्वाणा-वनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥६॥
सर्पो हारलता भवत्-यसिलता सत्पुष्प-दामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न-मनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥७॥
यो गर्भाऽ-वतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषे-कोत्सवो,
यो जातः परि-निष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य-पुरप्रवेश-महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥८॥
इत्थं श्री जिन-मंगलाष्टक-मिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्-तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च-सुजनैर्-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मी-राश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मी-रपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

जलशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीतासीतोदा - नारीनरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला - रक्तारक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-जलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्नगंधाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।

(जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें)

[यहाँ जल से हाथ धोयें।]

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रक्षालनं करोमि।

अमृत स्नान (पात्र शुद्धि)

(अनुष्टुभ्)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि।

तिलक लगाना

(उपजाति)

पात्रेऽर्पितं चंदनमोषधीशं, शुभ्रं सुगंधाहृच्-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वांग शुद्धि हेतवः नव तिलकं करोमि।

[१. शिखा, २. मस्तक, ३. ग्रीवा, ४. हृदय, ५. दोनों कान, ६. दोनों भुजाएँ, ७. दानों कलाई, ८. नाभि, ९. पीठ इन नौ स्थानों पर तिलक करें]

अभिषेक पाठ

(आचार्य माघनन्दीकृत)

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्-नतामर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति
तोयावभासि - चरणाम्बुज - युग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य-,
तन्मूर्ति - षूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्णिक (माध्याह्णिक/आपराह्णिक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि। (पुष्प क्षेपण करें)

(इन्द्रवज्रा)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि। (अभिषेक की थाली में श्रीकार लिखें)

(अनुष्टुभ्)

कनकाद्रिनिभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि। (सिंहासन स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजातप - निवारक - भूषिताग्रे।

वर्धस्व नन्द जयपाठ-पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि॥

(अनुष्टुभ्)

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(श्रीजी विराजमान करें)

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य - विधौ - सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दुद्ध-कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम-चंदन-भूषिताग्रान्॥

(अनुष्टुभ्)

शात-कुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय-पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चंदनादि-सुचर्चितान्॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(चारों कोनों में जल के कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि-गानै-
र्वादित्र-पूर-जय - शब्द-कलप्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपति - कीर्ति - मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(निम्न शलोक पढ़कर जल की धारा करें)

कर्म-प्रबन्ध-निगडै-रपि हीनताप्तम्
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम्।

त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै-रभिनयामि महाभिषेकं[१]॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुभ्)

तीर्थोत्तम-भवैर्नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान्॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

लघुशान्ति-मंत्र

(मालिनी)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्दै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥

(यहाँ चारों कलशों से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं वं वं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं हं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसन्तं श्री वृषादिवीरान्तान् चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवान् आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नगरे... वीर निर्वाण ..... मासोत्तममासे ....पक्षे .....तिथौ...वासरे मुनिआर्यिकाणां श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादभिषेकं करोमिति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-

मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा। (छत्र स्थापित करें)

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर - वारि-धारि-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये चमरद्वयं स्थापयामि स्वाहा। (चँवर स्थापित करें)

पानीय-चंदन - सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक - सुधूप-फल-व्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन - वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं...। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः,
सिद्धौशधाश्च भवदुःख-महा-गदानाम्।
सद्भव्य-हृज्जनित-पङ्क-कबन्ध-कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत-शान्तिकरा भवन्तु॥

(पुष्पांजलिं...)

नत्वा मुहुर्निज-करै-रमृतोप-मेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि। (श्रीजी का परिमार्जन करें)

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-

मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मयीं विधातुं,
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि। (वेदी में श्रीजी विराजमान करें)

(अनुष्टुभ्)

जल-गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीपसुधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चेजन्मदुःखापहानये॥

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ाएँ)

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्री-वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी - राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता-संवृद्धि-सम्पादकं,
कीर्तिश्री-जयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गंधोदकम्॥

ॐ ह्रीं जिनगंन्धोदकं स्वललाटे धारयामि। (उत्तमाङ्ग पर गंधोदक धारण करें)

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममंदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति अभिषेक क्रिया समाप्तं ॥

===

अभिषेक पाठ

(पं. जसहर राय कृत) (दोहा)

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमूँ जोरि जुगपान॥

(अडिल्ल)

श्री जिन जग में एसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इन्द्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवन-धनी॥

(हरिगीतिका)

अनुपम अमित तुम गुणनिवारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हर उर कोष में सो अकथ-गुण-मणि-राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं, नाम ही में भक्ति है॥१॥
ज्ञानावरणी दर्शन-आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इन्द्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥
तब इन्द्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरन-युत वंदत भयौ।
तुम पुण्य को प्रेरयो हरी ह्वै, मुदित धनपति सौं कह्यौ॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति, सफल सुरपद को करौ।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ॥२॥
ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपती।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयौ।
दे प्रदच्छिना बार-बार वंदत भयौ॥

अति भक्ति-भीनो नम्र-चित है, सवसरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गती को, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामण्डप, कनक मणिमय छाजहीं।
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं॥३॥
सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
ता पर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौंसठ चमर जी।
महा भक्तिजुत ढोरत हैं तहाँ अमर जी॥
प्रभु तरनतारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यह वीतराग दशा प्रतच्छ, विलोकि भविजन सुख लिया॥
मुनि आदि द्वादश सभा के भवि, जीव मस्तक नायकैं।
बहुँ भाँति बारम्बार पूजें, नमैं गुण गण गायकैं॥४॥
परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥
श्रम बिना श्रमजल रहित पावन, अमल ज्योति-स्वरूप जी।
शरणागतनिकी अशुचिता हरि, करत विमल अनूप जी॥
ऐसे प्रभु की शान्तमुद्रा को न्हवन जलतैं करैं।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति हैं, हम भानु ढिंग दीपक धरैं॥५॥
तुम तौ सहज पवित्र यही निचय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसुविधि वश दुख सह्यो॥
बीत्यो अनन्तों काल यह, मेरी अशुचिता ना गई।

तिस अशुचिता हर एक तुम ही, भरहुँ वांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल, रोष-रागादिक हरौ।
तनरूप कारागेह तैं उद्धार शिव वासा करौ॥६॥
मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गए।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनरथ पूरत सही।
नय-प्रमाण तैं जानि महा साता लही॥
पापाचरण तजि न्हवन करता, चित्त में ऐसे धरूँ।
साक्षात श्री अरिहन्त का मानों, न्हवन परसन करूँ॥
ऐसे विमल परिणाम होते, अशुभ नसि शुभबन्धतैं।
विधि अशुभ नसि शुभबन्धतैं ह्वै, शर्म सब विधि नासतैं॥७॥
पावन मेरे नयन भये तुम दरसतैं।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यान तैं।
पावन रसना मानी तुम गुणगान तैं॥
पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन, नींव शिव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी॥८॥
विघन-सघन-वन-दाहन-दहन-प्रचण्ड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि संज्ञा धरौ।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करौ॥
आनन्द-कारण दुख-निवारण, परम मंगलमय सही।
मोसों पतित नहिं और तुमसों, पतित-तार सुन्यौ नहीं॥

चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े ते, भये भवदधि पार ही॥९॥

(दोहा)

तुम भवदधि तैं तरि गए, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्त को, हमें उतारौ पार॥१०॥

अभिषेक स्तुति

(लय-जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ-हाँ-२, सब- रोज कराओ रे॥ प्रासुक...
१. ये अरिहन्त जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ-२, सब शीश झुकाओ रे। प्रासुक...
२. देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ-२, सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक...
३. रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आए, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ-२, सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक...
४. भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ-२, सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक...
५. फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ-२, जयकार लगाओ रे। प्रासुक...
६. प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ-२, सब करो कराओ रे। प्रासुक...

===

अभिषेक गीत

जल्दी-जल्दी चलो रे मंदिर, अपना फर्ज निभाने को।
प्रासुक जल से भरो कलशियाँ, प्रभु का न्हवन कराने को॥
जो अभिषेक कराके मैना, पति का कुष्ट मिटाई थी।
जिसके द्वारा श्रीपाल ने, कंचन काया पाई थी॥
जिससे हुए सात सौ सुंदर, वो ही गाथा गाने को।
प्रासुक जल से....
जिस अभिषेक को करके सुरगण, करें महोत्सव स्वर्गों में।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब पूजकर, करें पर्व जिन-भवनों में॥
देवों जैसे करके नमोऽस्तु, आए शीश झुकाने को।
प्रासुक जल से....
श्री जिन का अभिषेक न्हवन कर, दुख कष्टों का कीच हटे।
ऋद्धि-सिद्धि की बात कहें क्या?, मैली आतम चमक उठे॥
रोग शोक भय संकट हर के, वीतरागता पाने को।
प्रासुक जल से....
जिन-अभिषेक महापुण्यों से, बड़भागी कर पाते हैं।
देह शुद्ध कर लेकर कलशे, श्री जी का न्हवन कराते हैं॥
पाप नशा के पुण्य कमा के, भाग्य कमल महकाने को।
प्रासुक जल से....
हमने अपना फर्ज निभाया, भक्त पुजारी बनने का।
तू भी अपना फर्ज निभाले, हम को निज सम करने का॥
'सुव्रत' को आशीष मिले बस, आतम 'विद्या' पाने को।
प्रासुक जल से...।

===

वृहत्-शान्तिधारा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खण्डय खण्डय जहि जहि दह दह पच पच पाचय पाचय ॐ नमो अर्हं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं **अस्माकं** कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ-परमेष्ठि-परम-पवित्राय नमो नमः। **अस्माकं** श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्म-प्रसादात् सद्धर्म-श्री-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धिरस्तु सद्धर्म-स्वशिष्य-परशिष्य-वर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममङ्गलनामधेया **अस्माकं** इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादश-गणसहिताय, अनन्तचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञान लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादश-दोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठि-पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महिताय, अनन्त-संसारचक्र-प्रमर्दनाय, अनन्त-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, उपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय **अस्माकं** व्याधिं घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन-प्रसादात् **अस्माकं** सेवाकानां सर्वदोष-रोग-शोक-भय-पीड़ाविनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगाप-मृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्ति-कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं-पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा। **मम (अस्माकं) कामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **बलिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं-पापं-वैरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अग्निवायुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशत्रुविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसर्पवृश्चिक-सिंहादिभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वग्रहभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदोषं व्याधिं डामरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमंत्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मघातं परघातं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व नरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजाश्व-गोमहिषाजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूर-वेताल-शाकिनी-डाकिनीभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वापस्मारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अस्माकं अशुभकर्म-जनितदुःखानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-

भिन्दि। **दुष्टजन-कृतान् मंत्र-तन्त्र-दृष्टि-मुष्टि-छलछिद्रदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टदेवदानव-वीरनरनाहर-सिंह-योगिनीकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाष्टकुली - नागजनित-विषभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वस्थावर-जङ्गम-वृश्चिक-सर्पादिकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि-कृत-दोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ ह्रीं **अस्मभ्यं** चक्र- विक्रम- सत्त्वतेजो- बलशौर्य- वीर्य-शान्तिः पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानन्दनं गोकुलानन्दनं च कुरु-कुरु। सर्वराजानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहन्ताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरुपमुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फुर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्तिधारा॥
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

१. श्री वृषभ-वीर-प्रभु चौबीसों, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव-शास्त्र-गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

२. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव-भव में उपकारी॥
प्रभु का...

३. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

४. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुए मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

५. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

६. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

७. अभिषेक आरती पूजाएँ, सौभाग्य पुण्य से मिल पाएँ।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पाएँ मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप॥५॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किए, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥२२॥

मंगलपाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥२३॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥२४॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय॥२५॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म॥२६॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥२७॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू
लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं
पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥ १॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ २॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥ ३॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलम्॥ ४॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ ५॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥ ६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ ७॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्र एवं सकल जिनागमेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा-प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक येव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ ५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीशम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥

श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(इति जिनेन्द्र स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १॥

कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ २॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ३॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ४॥

जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ५॥

अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ६॥

सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ८॥

आमर्ष–सर्वौषधयस्तथाशी–र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ ९॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ १०॥

(इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

[समय कम होने पर या संस्कृत पढ़ने में कठिनाई होने पर यह लघु पूजन पीठिका भी पढ़ सकते हैं अथवा पूजन प्रारम्भ करें]

लघु पूजन पीठिका

विनय–पाठ (दोहा)

मन वच तन पावन बना, आया मैं प्रभु – द्वार।
जिन–सूरज जिन–चन्द्र को, नमोऽस्तु बारम्बार॥ १॥
कर्मों के हर्त्ता तुम्हीं, मुक्ति रमा के नाथ।
वीर! तीर संसार के, तुम्हीं त्रिलोकी नाथ॥ २॥
आतम वैभव के धनी, तुम धर्मी गुणवान।
स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, तुम्हीं पूज्य भगवान्॥ ३॥
भक्तों को तुम तारते, तारण–तरण जहाज।
मुझको भी तारो तुम्हीं, कृपा सिंधु जिनराज॥ ४॥
नाथ! आपका नाम भी, कष्ट विघ्न हर्त्तार।
मुझ पर भी करुणा करो, कर दो अब उद्धार॥ ५॥
जन्मादिक व्याधीं हरो, मैं आया हूँ पास।
कर्म बन्ध से मुक्ति दो, देकर कुछ संन्यास॥ ६॥
तुमरा वैभव देखकर, दास हुआ संसार।
मैं तो बस विनती करूँ, महिमा अपरम्पार॥ ७॥
जल बिन ज्यों मछली हुई, चाँद बिना ज्यों रात।
वैसे तुम बिन मैं हुआ, बालक ज्यों बिन मात॥ ८॥

नमूँ-नमूँ ओंकार को, वन्दूँ जिन चौबीस।
देवशास्त्रगुरु को नमूँ, हो मंगल आशीष॥ ९॥
परमेष्ठी पाँचों नमूँ, नमूँ-नमूँ नवदेव।
भूत भविष्यत आज के, वन्दूँ प्रभु जिनदेव॥ १०॥
मंगल-मंगल बोल हों, मंगल-मंगल ध्यान।
मंगलमय 'सुव्रत' रहें, हो सबका कल्याण॥ ११॥

(पुष्पाञ्जलिं...) (९ बार णमोकार)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं...)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं...)

(ज्ञानोदय)

पहला मंगल अपराजित यह, सभी विघ्न हरने वाला।
णमोकार यह मंत्र सदा ही, पाप नाश करने वाला॥
सुस्थित दुस्थित सभी दशा में, णमोकार जो ध्याते हैं।
पाप नशा भीतर बाहर से, पावन बन सुख पाते हैं॥

(दोहा)

अर्हम् सिद्ध समूह जो, सगुण मुक्ति के धाम।
कर्म रहित परमेश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥

श्री जिनवर की वन्दना, हरती विघ्न समूल।
भूत शाकिनी सर्प भय, हरे जहर का शूल॥

(पुष्पांजलिं..)

पाँचों कल्याणक नमूँ, जिनवाणी जिननाम।
अर्घ चढ़ा परमेश को, सादर करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-पंचपरमेष्ठी-जिनसहस्त्रनाम-जिनसूत्रेभ्यो अर्घं...।

पूजा प्रतिज्ञापाठ (ज्ञानोदय)

तीनलोक के स्वामी गुरुवर, नन्त चतुष्टय के धारी।
ज्ञान-सूर्य सर्वज्ञ हितैषी, समवसरण वैभवधारी॥
श्री अर्हन् की पूजा करने, द्रव्य शुद्ध कर मैं लाया।
ज्ञान हवन में पुण्य होमकर, भाव शुद्ध करने आया॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगलपाठ

(ज्ञानोदय)

स्वस्ति हों श्री वृषभनाथ जी, अजितनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री शम्भवनाथ जी, अभिनंदन जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री सुमतिनाथ जी, पद्मप्रभ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री सुपार्श्वनाथ जी, चन्द्रप्रभ जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री पुष्पदंत जी, शीतलनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री श्रेयांसनाथ जी, वासुपूज्य जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री विमलनाथ जी, अनन्तनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री धर्मनाथ जी, शान्तिनाथ जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री कुन्थुनाथ जी, अरनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री मल्लिनाथ जी, मुनिसुव्रत जी स्वस्ति हों॥

स्वस्ति हों श्री नमिनाथ जी, नेमिनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री पार्श्वनाथ जी, महावीर जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों चौबीसों स्वामी, देव-शास्त्र-गुरु स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों पाँचों परमेष्ठी, नवों देवता स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री जिनशासन जी, धर्म अहिंसा स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों 'सुव्रतसागर' के, 'विद्यागुरुवर' स्वस्ति हों॥

(पुष्पांजलिं..)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ (दोहा)

चौंषठ-चौंषठ ऋद्धियाँ, परमर्षि-ऋषिराज।
मंगल हम सबका करें, करें हृदय पर राज॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं परिपुष्पांजलिं...)

समुच्चय पूजन

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु साथ में, तीर्थंकर प्रभु बीस।
सिद्धचक्र भी पूज लें, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

है संसार मोह का दल-दल, जिनशासन का महल मिले।
देवशास्त्रगुरु बीसों जिनवर, सिद्धचक्र का कमल खिले॥
चरणकमल की करने पूजा, हृदय कमल पर बुला रहे।
कर-कमलों का आशिष पाने, कर नमोऽस्तु सिर झुका रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठी जिन समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अनादिकाल से सागर तपते, नदी बहे बादल बरसे।
फिर भी देह न शुद्ध हुई सो, रत्नत्रय जल को तरसे॥

निर्मल रत्नत्रय जल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

राग-द्वेष से झुलस रहे हम, तुम बिन कौन बचाएंगे।
अगर बचाया तो चंदन सम, हम शीतल हो जाएंगे॥
जिनशासन की छाया पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग में ऐसे जीव गुमे ज्यों, गुमे मरुस्थल में जीरा।
हमें थाम के नाथ! बचा लो, बन जाएँ अक्षत हीरा।
आत्मज्ञान का वैभव पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

भोग वासनाओं में अब तक, शान्ति किसी को मिली नहीं।
बिना साधनाओं के जग में, आत्म कली भी खिली नहीं॥
काम भोग का राग त्यागने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कितने भोजन पान किए पर, भूख मिटी ना तृप्त हुए।
फिर भी भोजन त्याग सके ना, ना निज में अनुरक्त हुए॥
भूख मिटाने निज रस पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्य: क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हम क्यों भटके हम क्यों भूले, कारण मोह अँधेरा है।
शरणागत को राह दिखा दो, फिर तो ज्ञान सबेरा है॥
मोह मिटाने दीप जला के, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप अनल में खेकर हमको, कर्म जलाने पंथ मिलें।
राग द्वेष जल जाएंगे तो, मोक्षदातृ अरिहन्त मिलें॥
कर्म जलाने धूप चढ़ाके, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जड़-फल जब निस्सार लगे तो, इन्हें चढ़ाने आ धमके।
'पुण्यफला अरिहन्ता' बनके, चखें मोक्ष फल आतम के॥
दुर्लभ महामोक्ष फल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्टम वसुधा जिनने पाई, अष्ट द्रव्य वो चढ़ा चुके।
सो अष्टम वसुधा पाने हम, अष्ट द्रव्य ले झुके-झुके॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घ बनने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस जिन, सिद्धचक्र भगवंत।
जिन्हें पृथक वा साथ में, नमोऽस्तु नन्तानन्त॥

(भुजंगप्रयात)

महादेव अर्हंत् स्वामी हमारे, नशा घातिया कर्म संसार तारें।
सभी सिद्ध स्वामी, बने मोक्षधामी, जिन्हें पूजके भक्त हों मोक्षगामी॥१॥
यही वीतरागी गुणी हैं हितैषी, नहीं कामि क्रोधी, नहीं रागि द्वेषी।
अतः शान्ति के मंत्र दे भक्त तारें, हमें क्यों विसारे, हमें शीघ्र तारें॥२॥
कहें देव अर्हंत जो तत्त्व साँचे, उन्हें गूँथ के ग्रन्थ आचार्य वाँचें।
अनेकान्त रूपी स्याद्वाद वाणी, इसे थाम खोजें चिदानंद प्राणी॥३॥
उपाध्याय आचार्य निर्ग्रन्थ साधू, करें संयमी रोज अध्यात्म जादू।
ये रत्नत्रयी हैं दिगम्बर विहारी, करें पार नैया विरागी हमारी॥४॥
विदेही विराजे सु-बीसों जिनेशा, हमें दर्श हों भावना है हमेशा।
यही भावना है यही कामना है, कटें पाप सारे यही प्रार्थना है॥५॥

(अर्ध ज्ञानोदय)

देव शास्त्र गुरु बीसों जिनवर, सिद्ध अनन्तानन्त भजें।
सुव्रत बनके संत दिगम्बर, मुक्तिवधू के संग सजें॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनन्तानन्त सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु प्रभु करें, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, देवशास्त्र गुरु राय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजेंएकरें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाकेएकर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥

अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

रत्नों जैसा अर्घ्य न मेरा, सुर छन्दों मय वचन नहीं।
भाव भक्ति भी दिखा न सकता, गुण गाने का यतन नहीं
फिर भी अनर्घपद को पाने, सादर अर्घ्य समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

दुनियाँ में जड़ वस्तु पाके, हमने उनका मूल्य किया।
किंतु आप ने इन्हें त्यागकर, निज चेतन बहुमूल्य किया॥
हम भी हों बहुमूल्य आप सम, अतः अर्घ्य यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचबालयति अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनन्त सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥

दयानिधे! निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ्य यह भेंट करें॥
वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व, महावीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो

नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्यखण्डे-भारतदेशे-मध्यप्रदेशे-......जिलान्तर्गते.....मासोत्तममासे.....मासे.....पक्षे....तिथौ....वासरे..मुनि-आर्यकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

===

महार्घ्य (प्राचीन)

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों॥
अरहंत भाषित वैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय,जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय,खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलास श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय,होय पति शिवगेह के॥

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विध भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंच-परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-

षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर-पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ (प्राचीन)

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थप्रर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक,नमो शान्तिहित शान्ति विधायक ॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघ को ॥
पूजें जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरुपूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप, मेरे लिए करहिं शान्ति सदा अनूप ॥
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे ॥
होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म - धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा ॥
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी ॥
घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का ॥
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने ॥
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुख से ॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ, तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों क क्षय सुबोध सुखकारी ॥

(पुष्पाञ्जलिं...) (कायोत्सर्ग - नौ बार णमोकार मंत्र)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान ॥
मंत्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजें भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

===

श्री शान्तिनाथ पूजन

स्थापना (शंभु)

हे! शान्ति प्रदाता शान्तिप्रभु, चैतन्य शान्ति के अधिवासी।
हो जीव मात्र के इष्ट तुम्हीं हम, विश्व शान्ति के अभिलाषी।
सुख शान्ति शीघ्र तुम सम पाएँ, सो शान्तिप्रभु को पूज रहे।
प्रभु हृदय वेदिका पर तिष्ठो, भक्तों के नमोऽस्तु गूँज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

है जन्म सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नव यौवन में।
है मरण दुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस जीवन में॥
दुख मातम रोग अशान्ति हरो, जल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

है भव भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग माया में।
रिश्तों-नातों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ इस काया में।
धन पद गृह युद्ध अशान्ति हरो, चन्दन सी शान्ति करो आहा
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

है स्वर्ग सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सिंहासन में।
चौरासी लाख योनियों में, है शान्ति कहाँ भव भटकन में।
जग भागमभाग अशान्ति हरो, अक्षत सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

है घर गृहस्थी में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ सुर कन्या में।

है स्त्री सुखों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष कन्या में॥
स्त्री पुरुषों की अशान्ति हरो, पुष्पों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

है भूख प्यास में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ विष अमृत में।
छप्पन भोगों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ रस व्यंजन में॥
रस भोजन भोग अशान्ति हरो, नैवेद्य सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

है अंधकार में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ उजयारों में।
बिजली बल्बों में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नभ तारों में॥
दैनिक जीवन की अशान्ति हरो, दीपक सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

है दौड़ धूप में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ कर्मों में।
है राग-द्वेष में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ नो-कर्मों में॥
परिषह उपसर्ग अशान्ति हरो, धूपों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

खोने-पाने में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ घर भरने में।
निंदा ईर्ष्या में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ कुछ करने में॥
भय वैर विरोध अशान्ति हरो, फल जैसी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल.....)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[2]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[2]
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[2]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[2]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो....

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर....)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथजी
सौधर्म शचि सह आये, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथजी
नृप विश्वसेन हर्षाये, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथजी

चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा- झूठी दुनियाँ त्याग, धार ले वैराग्य

जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पति मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग चेतन जाग। धार ले वैराग्य।
जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्येति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाये, केवलज्ञानी हों अर्हन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥
दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अर्हन्त कोएकरती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥

कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता, ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥
चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

विघ्न हरण मंगलकरण, शान्तिनाथ भगवान्।
जिनकी पूजन से मिले, वीतराग विज्ञान॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्ति प्रभो की, जय-जय अतिशयकारी की।
जय हो! जय हो! दया सिन्धु की, जय-जय मंगलकारी की॥
वीतराग - सर्वज्ञ - हितैषी, महिमा खूब तुम्हारी है।
सबके दिल पर छाए रहते, अजब-गजब बलिहारी है॥१॥
पिछले भव में रहे मेघरथ, राज-पाठ जिनने छोड़ा।
मुनि बन तीर्थंकरप्रकृति का, नाम कर्म बन्धन जोड़ा॥
फिर प्रायोपगमन धारण कर, कर संन्यासमरण उत्तम।
काया तज अहमिन्द्र बने फिर, हस्तिनागपुर लिया जनम॥२॥
विश्वसेन नृप ऐरा रानी, तुमको पाकर धन्य हुए।
गर्भ जन्म कल्याणक करके, सारे भक्त प्रसन्न हुए॥
शंख सिंह भेरी घण्टा से, जन्म सूचना पाकर के।
चार निकायों के देवों ने, पर्व मनाया आकर के॥३॥
गर्भ-भवन में शचि-इन्द्राणी, जाकर के माँ बालक को।
सुला दिया माया-निद्रा से, उठा लिया जिन-बालक को॥

सौंप दिया सौधर्म इन्द्र को, इन्द्र चले ऐरावत से।
सुमेरु पर जन्माभिषेक कर, नाम शान्तिनाथ रक्खे॥४॥
चक्र शंख सूरज चंदादिक, चिह्न सुनहरे थे तन में।
होकर कामदेव बारहवें, किन्तु रहे निज चेतन में॥
कुमारकाल बीत जाने पर, विश्वसेन निज राज्य दिए।
चौदह रत्न और नौ निधियाँ, प्रकट हुए जो भोग लिए॥ ५॥
शान्ति चक्रवर्ती ने इक दिन, दर्पण में दो मुख देखे।
आत्मज्ञान वैराग्य हुआ तो, क्षणभंगुर वैभव फैंके॥
ज्यों घर तजने का सोचे तो, लौकान्तिक अनुमोदन पा।
राज्य दिया नारायण सुत को, फिर दीक्षा अभिषेक हुआ॥ ६॥
तब सर्वार्थसिद्धि पालकी, से गृह तजने यतन किए।
सहस्र आम्रवन में दीक्षा ले, पंचमुष्ठि केशलौंच किए॥
शान्तिनाथ जब बने दिगम्बर, धरती अम्बर गूँज पड़े।
ज्ञान मनःपर्यय प्रकटा तो, भक्ति पुण्य सब लूट चले॥७॥
मन्दिरपुर में सुमित्र राजा, दीक्षा का आहार दिए।
पंचाश्चर्य पुण्य पाया तो, सब ने जय-जयकार किए॥
सोलह वय छद्मस्थ बिता के, बने केवली शान्तीश्वर।
समवसरण फिर हुआ सुशोभित, थे छत्तीस पूज्य गणधर॥ ८॥
मासिक योगनिरोध धारकर, श्रीसम्मेदशिखर पर जा।
शुक्लध्यान से कर्म नशाकर, सिद्ध मोक्ष में बने अहा॥
जो श्रीषेण हुए राजा फिर, भोगभूमि में आर्य हुए।
देव हुए फिर विद्याधर जो, देव हुए बलभद्र हुए॥९॥
देव हुए वज्रायुध चक्री, फिर अहमिन्द्र मेघरथ बन।
मुनि सर्वार्थसिद्धि पहुँचे फिर, तीर्थंकर शान्ति भगवन्॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् के, बारह-बारह भव सुन्दर।

शान्तिनाथ सा अन्य कौन जो, धर्म धुरंधर तीर्थंकर॥१०॥
कामदेव ने जन्म धारकर, जीती सब सुन्दरताएँ।
शान्तिनाथ ने चक्री बनकर, जय की सभी सम्पदाएँ॥
तीर्थंकर बन शान्तिनाथ ने, पाया मोक्ष कर्म कर क्षय।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, शान्तिप्रभु की बोलो जय॥११॥
कालचक्र वश लुप्त धर्म को, वृषभ आदि प्रभु दिखलाए।
फिर भी प्रसिद्ध अवधि अंत तक, बोलो कौन चला पाए?
किन्तु बाद में शान्तिप्रभु से, मोक्षमार्ग जो प्रकट हुआ।
अपनी निश्चित अवधिकाल तक, बिन बाधा के प्राप्त हुआ॥१२॥
ऐसे शान्तिनाथ भगवन् का, ध्यान निरन्तर धारो तो।
होगा भला शान्ति भी होगी, बुध ग्रह में मत बाँधो तो॥
आज आद्य गुरु शान्तिनाथ का, चमत्कार कुछ अलग दिखे।
खण्ड-खण्ड सौभाग्य पिण्ड भी, 'सुव्रत' पुण्य अखण्ड दिखे॥१३॥

(सोरठा)

हिरण चिह्न पहचान, शान्तिनाथ प्रभु नाम है।
त्रयपद मय भगवान्, बारम्बार प्रणाम है॥
पुण्य खरीदा आज, भक्ति मूल्य का दाम दें।
शान्तिनाथ जिनराज, स्वर्ग मोक्ष सुख धाम दें॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री पार्श्वनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

निर्बलता अब छोड़ कर, निर्मल भजो जिनेश।
प्रभु-पूजा वरदायिनी, वर पा बनो महेश॥

(शंभु)

हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! हे पार्श्वनाथ! उपसर्गजयी।
हे चिंतामणि! अंतर्यामी!, हे पार्श्वनाथ! परिषह विजयी॥
जिनने अपने मानस तल पर, प्रभु! नाम किया अंकित तेरा।
वे अतिशय ऊर्जावान हुए, पा शक्ति, मुक्ति का पथ डेरा॥
तूफान घटा हो या आँधी, तो पार्श्वनाथ के भक्त कभी।
ना चंचल हों ना धैर्य तजें, हैरान नहीं हों दास सभी॥
वे कर्मजयी हों दयामई, जो पार्श्वनाथ को पाते हैं।
हम करें अर्चना कल्याणी, हो विश्वशान्ति यह ध्याते हैं॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जनम-मरण का क्या कहना? पर, असमय मरण कभी सोचे।
माँ के आँसू इतने बरसे, सागर पड़े बड़े छोटे॥
जल से जनम मरण हरने को, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

आपस की टकरार भयंकर, जलें महावन भी इससे।
भवाताप का क्या कहना हो?, भव-भव में जलते इससे॥
चंदन से भव-ताप मिटाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

धरा रहेगी, धरा रहेगा, हमको तो निश्चित जाना।
मुट्ठी बाँधे सब आते पर, हाथ पसारे ही जाना॥
पुंज चढ़ा अक्षयपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन बस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय-अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

काँटों से हम बचते रहते, तभी फूल ना खिल पाते।
सम्यक् ना पुरुषार्थ करें तो, आत्म शान्ति भी ना पाते॥
पुष्प चढ़ाकर काम नशाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोजन कर ज्यों मौज उड़ाते, अगर बुराई त्यों खाएँ।
देह-व्याधियाँ लूट-मार सब, तत्क्षण जग से नश जाएँ॥
ये नैवेद्य क्षुधा रुज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

दीप जला आरति करने से, शाम-रात क्या हट सकती?
पर श्रद्धा दीपक से अपनी, शाम-रात भी टल सकती॥
अपना श्रद्धा दीप जलाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप जले खुद, पर जग महके, उसे पराये राख करें।
ऐसे ही आतम का सौरभ, कर्म कीच रज नाश करे॥
खेकर धूप कर्म-रज हरने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

आज सँभालो कल सँभलेगा, हर मुश्किल का हल होगा।
पल मत खोना छल मत करना, मंजिल-पथ समतल होगा॥
विधिफल त्याग मोक्ष फल पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तज प्राणत सुर धाम।
वामा माँ के गर्भ में, वसे पार्श्व भगवान॥

ॐ ह्रीं श्री वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं श्री पौषकृष्ण-एकादश्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं श्री चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

दुनियाँ में यशवान हैं, पार्श्वनाथ जिनराज।
गुण गाते हम, तुम करो, हमरे दिल पर राज॥

(ज्ञानोदय)

संकट उपसर्गों से डरकर, जिनको जीवन दुख लगता।
पाप त्यागने से जो डरते, मोक्षमार्ग से भय लगता॥
अपनी हिम्मत हारे चुके जो, टूट चुके जो बिखर चुके।
वो पाकर पारस का सम्बल, ऋद्धि-सिद्धि पर संवर चुके॥१॥
दुख संकट उपसर्ग उन्हें अब, कभी सता ना सकेत है।
उनका जीवन कुन्दन सम हो, जो पारस को भजते हैं॥
जी हाँ! ये वो ही पारस जो, जन्म बनारस लेते हैं।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा माँ के बेटे हैं॥२॥
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से, तेईसवें तीर्थेश रहे।
आओ! उनकी कथा वाँच लें, जो हम सब के ईश रहे॥
भरतक्षेत्र के पोदनपुर में, जब राजा अरविन्द्र हुए।
विश्वभूति वा अनुन्धरी के, कमठ अनुज मरुभूति हुए॥३॥
दोनों राजा के मंत्री थे, दुर्जन कर्मठ रहा विष सा।
मरुभूति सुन्दर पत्नी का, स्वामी सज्जन अमृत सा॥
मरुभूति को मार कमठ ने, पत्नी पर अधिकार किया।
मरुभूति ने वज्रघोष के, हाथी वाला जन्म लिया॥४॥
फिर क्रमशः सुर रश्मिवेग सुर, वज्रनाभि नर-चक्रेश्वर।
ग्रैवेयिक अहमिन्द्र देव हो, फिर आनन्द मण्डलेश्वर॥
राजा ने मुनिराजा बनकर, तीर्थंकर प्रकृति बाँधी।
सल्लेखन कर प्राणत सुर से, इन्द्र त्याग आए काशी॥५॥

वामा माँ के आँगन में फिर, हुआ गर्भ कल्याणक था।
सोलह सपनों का मंगल फल, अश्वसेन ने वाँचा था॥
रत्नों की वर्षा सुखकारी, हुआ जन्म कल्याणक फिर।
शचि सौधर्म इन्द्र ने प्रभु को, लिया गोद में खुश होकर॥६॥
कर अभिषेक इन्द्र ने प्रभु का, नाम रखा फिर पार्श्वकुमार।
हरे रंग के बालक पारस, यौवन-क्रीड़ा किए बिहार॥
तो देखा कि तापस नाना, पंच-अग्नि तप को मचले।
सो लकड़ी कटने के पहले, पारस समझाने निकले॥ ७॥
बोले आप 'इसे मत काटो', पर नाना जी काटे थे।
सो दो सर्प-सर्पिणी कटकर, दो हिस्सों में बांटे थे॥
जो पारस के उपदेशों को, सुनकर स्वर्ग सिधारे थे।
पद्मावति धरणेन्द्र हुए जो, शान्ति-भाव को धारे थे॥८॥
इस विध पारस तीस वर्ष की, कुमारदशा गुजारे थे।
किन्तु एक दिन भेंट देखकर, भवसुख से वैरागे थे॥
तप कल्याणक में दीक्षा ली, साथ तीन सौ थे राजे।
गुल्मखेट में धन्यराज के, ढोल पारणा के बाजे॥९॥
यूँ छद्मस्थ चार माहों के, बाद कमठ के प्राणी ने।
दस भव के रिपु शम्बर बनकर, कष्ट दिए अभिमानी ने॥
सात दिनों तक महाभयंकर, उपसर्गों को पार्श्व छुए।
पद्मावति ने छत्र लगाया, फणारूप धरणेन्द्र हुए॥१०॥
दूर हुआ उपसर्ग कमठ का, प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
समवसरण में दिव्यध्वनि दे, पारस को निर्वाण हुआ॥
स्वर्णभद्र की कूट शिखरजी, श्रावण शुक्ल सप्तमी को।
किये मोक्ष कल्याणक उत्सव, सबने मोक्ष सप्तमी को॥११॥
तब से अब तक पारस प्रभु के, जय-जयकारे गूँज रहे।
प्रभु जैसे उपसर्ग विजेता, बनने हम सब पूज रहे॥

क्षमा धरें भव पार करें हम, पूजा का फल यह देना।
'विद्या' के 'सुव्रत' को पारस, पारसमणि सम कर देना॥१२॥

(दोहा)

पारसमणि सोना करे, पारस पारसनाथ।
सो पारस बनने करें, हम नमोऽस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं भयहर! उपसर्गविजेता! श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री महावीर पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

जय महावीर-जय महावीर!,
शासननायक-जय महावीर।
जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनाएँ।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाएँ॥
अष्ट द्रव्य की थाल सजायी, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आए मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥

जय महावीर-जय महावीर!,
शासननायक-जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।
मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानन्दन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ाएँ शिव पद पाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ाएँ काम नशाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुए पर, कर्म झुलस भी ना पाए।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आए॥
जगत्-भूप को धूप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाएँ हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुर धाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री महावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री महावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्री महावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री महावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री महावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (ज्ञानोदय)

जिनशासन की अनादिधारा, तीर्थंकर प्रभु चला रहे।
भव्य-जीव तो इस धारा में, निज को धुला रहे॥
तीर्थंकर चौबीस जिनेश्वर, समय-समय पर जन्म धरें।
वृषभनाथ से महावीर तक, जिनशासन को धन्य करें॥१॥
अंतिम प्रभु श्री वर्धमान जी, वर्तमान जिननायक हैं।
जिनके शासन तीर्थकाल में, आज तत्त्व सुख दायक हैं॥

आओ! उनकी कथा कहें जो, पंचम बालयतीश रहे।
माँ त्रिशला सिद्धार्थ राज के, श्री नंदन जगदीश रहे॥२॥
जी हाँ! ये वो ही स्वामी जो, पुत्र भरत चक्री के थे।
जीव भील का बना मरीचि, नाती वृषभनाथ के थे॥
गुरु-भक्ति से वृषभनाथ के, साथ बने मुनि दीक्षा ली।
लेकिन परिषह सह न सके सो, मिथ्यामत की शिक्षा ली॥३॥
परिव्राजक की दीक्षा लेकर, मिथ्यापथ आसीन हुए।
कल्पित आदिक तत्त्व रचाकर, जन्म-मरण लवलीन हुए॥
किन्तु सिंह के जीवन में, जब मुनियों का उपदेश सुना।
सिंह प्राप्त कर सम्यग्दर्शन, सिंहकेतु सुरदेव बना॥४॥
कनकोज्ज्वल सुर हरिषेण सुर, प्रियमित्र सुर नंद हुआ।
जो तीर्थंकर प्रकृति बाँध के, सल्लेखन कर इन्द्र हुआ॥
सोलह सपने देकर जिनके, गर्भ जन्म कल्याण हुए।
शचि ने सम्यग्दर्शन पाया, जन्मों के अभिषेक हुए॥५॥
नाम **वीर** श्री **वर्धमान** रख, देवराज के नृत्य हुए।
संजय विजय वीर दर्शन कर, मुनि जब निःसंदेह हुए॥
तो फिर **सन्मति** नामकरण कर, बाल्यकाल के खेल हुए।
संगम सुर से **महावीर** का, नाम प्राप्त कर ख्यात हुए॥६॥
तीस वर्ष के कुमारकाल को, व्यतीत कर भव भोग तजे।
नहीं सुहाई हल्दी मेंहदी, विवाह मण्डप भी न सजे॥
ज्यों वैराग्य हुआ त्यों ही तो, तप कल्याणक पर्व हुआ।
कूलग्राम के कूलराज के, खीर पारणा हर्ष हुआ॥७॥
उज्जयिनी में महारुद्र ने, महा घोर उपसर्ग किए।
हार मानकर **अतिवीर** वा, **महतिपूज्य** दो नाम दिए॥
साँकल बँधी चंदना ने फिर, किया वीर का ज्यों दर्शन।
बन्धन टूटे तो वीरा का, करे चंदना पड़गाहन॥८॥

विधिपूर्वक आहार दान दे, पर्व चंदना ने पाए।
बारह वय छद्मस्थ विताकर, केवलज्ञान प्रभु पाए॥
किन्तु हुई ना दिव्यदेशना, तब गौतम को ज्ञान मिला।
मुनि बन प्रथम बने गणधर जो, कुल ग्यारह का साथ मिला॥९॥
बनी चंदना प्रथम आर्यिका, समवसरण की सभा सजी।
विपुलाचल पर दिव्यध्वनि दे, समवसरण की सभा तजी॥
तीस वर्ष कैवल्यकाल फिर, योगनिरोध किए स्वामी।
पावापुर के सरवर से फिर, मोक्ष गए अंतर्यामी॥१०॥
कार्तिक कृष्ण आमवस प्रातः, प्रभु निर्वाण पधारे थे।
हुआ मोक्ष कलयाणक उत्सव, लाडू भक्त चढ़ाए थे॥
उसी शाम को गौतम गणधर, केवलज्ञान प्रकट करते।
सो संध्या में दीप जलाकर, घर-घर दीपोत्सव करते॥११॥
तब से चले वीरशासन यह, हम सबका उद्धार करे।
भव-भव तक हम ऋणी रहेंगे, हम पर प्रभु उपकार करें॥
ऋद्धि-सिद्धि-समृद्धि पाएँ, पर्व दशहरा दीवाली।
'विद्या' के 'सुव्रत' यह चाहें, मिले सभी को खुशहाली॥१२॥

(सोरठा)

महावीर भगवान, हम भक्तों के प्राण हैं।
करते नमोस्तु ध्यान, होते निज कल्याण हैं॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली पूजन

(दोहा)

आदिनाथ को नमन कर, भरत प्रभु को ध्याऊँ।
बाहुबली को सिर झुका, पूजा साथ रचाऊँ॥

(ज्ञानोदय)

आदि प्रवर्तक आदिनाथ ने, पथ दे जीना सिखा दिया।
चक्री भरतदेव ने चक्कर, कर्म चक्र का छुड़ा दिया॥
बाहुबली ने बाहुबली हो, कर्म शत्रु को हरा दिया।
इन्हें विराजित करके मन में, मैंने माथा झुका दिया॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रा! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

आधा जीना आधा मरना, नाथ! यही अभिशाप हरो।
पूरा जीना पूरा मरना, मुझे सिखा दो पाप हरो॥
जनम मरण का मरण करा दो, प्रासुक नीर समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

क्रोध आग जब क्षमा नीर से, बुझे तभी चित शीतल हो।
आतम बगिया महक उठे फिर, संयम का पथ मंगल हो
क्रोध आग हर क्षमा नीर दो, चंदन तुम्हें समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

जड़ को चेतन चेतन को जड़, बहिरातम बनके माना।
परमातम अन्तर आतम का, अन्तर अब तक ना जाना

भेद ज्ञान अब मुझे करा दो, तंदुल पुंज समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

इन पुष्पों ने भगवन् मेरा, चैन छीन बेचैन किया।
काम रोग की व्यथा बढ़ाकर, फिर व्याकुल दिन रैन किया
जिन बनकर मैं काम नशाऊँ, जीवन पुष्प समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

भोग मुझे हर समय भोगते, मैं क्या भोगूँ भोगों को।
लेकिन भोगों की इच्छा से, बढ़ा रहा भव रोगों को
ज्ञानामृत दो क्षुधा नशाऊँ, ये नैवेद्य समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

सूर्य नाम सुनते ही जग में, अंधकार दादा भागें।
वैसे ही प्रभु नाम सुनें तो, मोह नींद से उठ जागें
आतम का मैं दीप जलाऊँ, प्रभु पद दीप समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कब तक मुझको धूप जलाना, तथा धूप में जलना है।
कब चिन्मय सा रूप सजा के, मुक्तिरमा से मिलना है

धूल उड़ा दो मम कर्मों की, अनुपम धूप समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।
जैसे फल पेड़ों से जुड़कर, बनते सरस मधुर मीठे।
वैसे मुझको जोड़े रखना, अपने चरणों से नीके
महा मोक्षफल चरण आपके, ये फल जिन्हें समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।
रत्नों जैसा अर्घ्य न मेरा, सुर छन्दों मय वचन नहीं।
भाव भक्ति भी दिखा न सकता, गुण गाने का यतन नहीं
फिर भी अनर्घपद को पाने, सादर अर्घ्य समर्पित है।
आदि-भरत प्रभु बाहुबली की, चरण वन्दना अर्चित है॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।
जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री त्रयजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला (दोहा)

आदि-भरत-बाहुबली, प्रथम किए कल्याण।
जिनकी महिमा गीत को, गाऊँ मैं धर ध्यान॥

(ज्ञानोदय)

रोटी कपड़ा मकान को जग, दुखी-दुखी मर मार रहा।
कल्पवृक्ष जब खो बैठा तो, करता हा-हाकार रहा॥
तब आदीश्वर ने शिक्षा दे, भक्तों पर उपकार किया।
कृषी करो या ऋषी बनो ये, भव्यों को उपहार दिया॥१॥
असि मसि आदिक षट्कर्मों का, दिया दिया वरदान दिया।
ब्राह्मी और सुन्दरी दोनों, कन्याओं को ज्ञान दिया॥

प्रजा व्यवस्थित करके तुमने, धारा था वैराग्य महा।
खोले धर्म द्वार इस युग में, आदिम जिनवर बने यहाँ॥२॥
मोक्षमार्ग बतलाया चलके, षट्-आवश्यक भी पाले।
इसीलिए हे पागल मनवा, जिनवर के गुण तू गा ले॥
आदिनाथ के पुत्र भरत जो, बने चक्रवर्ती पहले।
चौथा वर्ण बना के जग में, राज्यों की जय को निकले॥३॥
चक्र चला के जय पाई पर, हुआ न वापिस चक्र जहाँ।
तब गुस्सा आई चक्री को, दुश्मन मेरा कौन यहाँ॥
मेरी जिसे दासता अथवा, ये सत्ता स्वीकार नहीं।
तब पाए लघु भ्राता अपने, जिसने मानी हार नहीं॥४॥
तभी भरतजी बाहुबली को, हार दिलाना ज्यों सोचे।
जल्ल मल्ल फिर दृष्टि युद्ध में, हारे भरत चक्र फैंके॥
परिक्रमा कर चक्र रुका तब, लज्जित हुए भरत हारे।
बाहुबली फिर वैरागी बन, राज-पाट त्यागे सारे॥५॥
एक साल तक उपवासी बन, ध्यान किया उपसर्ग सहा।
लेकिन केवलज्ञान हुआ ना, हाय! हाय! यह कर्म कथा॥
भरत भ्रात ने तब जाकर के, जैसे क्षमा याचना की।
बाहुबली निर्विकल्प बने तब, अपनी पूर्ण साधना की॥६॥
केवलज्ञानी बनकर स्वामी, श्री कैलाशधाम पहुँचे।
बाहुबली जी आदिनाथ से, पहले मोक्ष धाम पहुँचे॥
केवलज्ञान शीघ्र उपजा के, भरत बने शिवपुर वासी।
आदिनाथ फिर मोक्ष पधारे, मैं तीनों का पद वासी॥७॥

तीन-तीन प्रभुओं की अर्चा, मैंने साथ रचा डाली।
इसका फल बस इतना पाऊँ, रात दिवस हो दीवाली॥
राग द्वेष औ मोह तीन ये, दोष सभी मम नाथ हरो।
रत्नत्रय से मुझे सजाकर, 'सुव्रत' के सब पाप हरो॥८॥

(दोहा)

त्रय योगों को शुद्ध कर, गाए ये गुणगान।
इसके फल से कण्ठ मम, प्रभु से हो स्वरवान॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली त्रय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

त्रय जिनेन्द्र प्रभुवर करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, त्रय जिनेन्द्र जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ पूजन

स्थापना (दोहा)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ को, नमोऽस्तु बारम्बार।
पूजा के पहले करें, शीश झुका सत्कार॥

(ज्ञानोदय)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेश्वर, तीन-तीन पद के धारी।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, क्रम-क्रम से जग हितकारी॥
पूजा करने भाव बनाए, द्रव्य सजाए मनहारी।
हृदय कमल पर आन विराजो, तीनों भगवन उपकारी॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रा! अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो...। (पुष्पांजलिं...)

जीवन की जो रही परीक्षा, नाम उसी का मरण रहा।
जनम बुढ़ापा उसके साथी, इनसे काई नहीं बचा॥
सफल परीक्षा में होने को, प्रासुक जल यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

तपकर कंचन कंचन सा हो, हार गले का बन चमके।
किन्तु नाथ! हम भवाताप से, आज तलक तो ना चमके
ताप हरें कुन्दन से चमकें, सो चंदन यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

ऊँचाई पर जाना हो तो, सूर्य ताप सहना होगा।
शाश्वत पद को पाना हो तो, सम्यक् तप करना होगा
सम्यक् तप कर शाश्वत बनने, उज्ज्वल अक्षत अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान...।

छेद काष्ठ में कर सकता पर, भ्रमर फूल में फँस मरता।
त्यों चेतन सुख वाला है पर, काम व्यथा से दुख सहता
ब्रह्मचर्य सौरभ महकाने, पुष्प पुंज यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी पेट को कभी जीभ को, कभी मनोगत इच्छा को।
पापी बन जाती है दुनियाँ, भूल आपकी शिक्षा को
क्षुधा मिटाने नैवेद्यों की, श्रेष्ठ भेंट यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

असुरक्षित दीपक ज्यों बुझते, आँधी तूफानों द्वारा।
त्यों ही तुम बिन हम भक्तों के, जीवन में है अँधयारा
उजयारा तुम सम पाने को, जगमग दीपक अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

धूप जले तो धुँआ राख के, साथ सुगंधी भी फैले।
पर कर्मों की रज से हम तो, सदा रहे मैले-मैले
नाथ! आपकी पद रज पाने, धूप सुगंधी अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं...।

नहीं परीक्षा से हम डरते, किन्तु कटुक फल से डरते।
मधुर-मधुर फल पाएँ खाएँ, यह इच्छा भी ना रखते
लेकर दीक्षा मुक्ती पाने, प्रासुक फल यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

दुनियाँ में जड़ वस्तु पाके, हमने उनका मूल्य किया।
किंतु आप ने इन्हें त्यागकर, निज चेतन बहुमूल्य किया॥
हम भी हों बहुमूल्य आप सम, अतः अर्घ्य यह अर्पित है।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ प्रभु को, नमोऽस्तु रोज समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, गर्भों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, जन्मों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, दीक्षा के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, ज्ञानों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

शान्ति-कुन्थु-अरनाथ के, मोक्षों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

तीनों पदधारी रहे, शान्ति-कुन्थु-अरनाथ।
जयमाला के पूर्व में, हो नमोऽस्तु नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

जय हो! जय हो! शान्तिनाथ की, जग के शान्ति प्रदाता की।
जय हो! जय हो! कुंथुनाथ की, सबके आश्रयदाता की॥
जय हो! जय हो! अरहनाथ की, ऋद्धि-सिद्धि सुख दाता की।
शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेश्वर, जय हो! भाग्य विधाता की॥१॥
कामदेव चक्री तीर्थंकर, तीन-तीन पदवी धारी।
कामदेव के रूप जन्म ले, दुनियाँ मोहित की सारी॥

जिनको देख युवतियाँ नारीं, निज श्रृंगार भूलती थीं।
गोदी में बच्चे उल्टे ले, भोजन पान भूलती थीं॥२॥
षट्खण्डों के अधिपति बनकर, शौर्य पराक्रम दिखा दिए।
जिससे दुश्मन राजाओं के, जग में छक्के छुड़ा दिए॥
चौदह रत्न नवोनिधि पाई, छ्यानवें हजार रानी थीं।
चक्ररत्न पा चक्रवर्ति हो, ली दीक्षा कल्याणी भी॥३॥
तीर्थंकर हो धर्मचक्र से, समवसरण को सजा दिया।
कर्मचक्र को नष्ट किया फिर, मुक्तिवधू को रिझा लिया॥
तीन लोक के उच्च शिखर पर, नाथ! विराजे हैं जाकर।
हम तो वहाँ न जा सकते सो, करें अर्चना गुण गाकर॥४॥
अब तो केवल यही प्रार्थना, शान्तिप्रभु दो शान्ति हमें।
कुन्थुनाथ जी करुणा कर दो, अरहनाथ दो मुक्ति हमें॥
है विश्वास आश भी पूरी, हमको आप निहारोगे।
आज नहीं तो कल या परसों, हम भक्तों को तारोगे॥५॥

ॐ ह्रीं श्री शान्ति-कुन्थु-अरनाथ जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्ति-कुंथु-अर प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, शान्ति-कुन्थु-अर राय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री पंच बालयति तीर्थंकर पूजन

स्थापना (दोहा)

पाँचों बालयतीश प्रभु, वासपूज्य मल्लीश।
नेमि पार्श्व अतिवीर को, हो नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

चौबीसों तीर्थंकर करते, पूर्ण चार पुरुषार्थों को।
किन्तु मिले हैं काल दोष से, पंच बालयति भक्तों को॥
यद्यपि यह अपवाद नियम का, पर आदर्श लगे हमको।
पाँचों बाल ब्रह्मचारी की, अतः रचाएँ पूजन को॥

(दोहा)

श्रद्धासन पर आ वसो, पाँचों बाल यतीश।
बाल ब्रह्म में रम सकें, दो ऐसा आशीष॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकर अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(ज्ञानोदय)

जन्म नदी के मरण तटों से, इच्छा सागर भर न सका।
किन्तु हुआ खारा अति खारा, जिससे अपना शौर्य थका॥
जन्म मरण दुख प्रभु सा हरने, प्रासुक जल की धार करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं...।

कभी मिलन का राग जलाएँ, कभी वियोग भरी पीड़ा।
ऐसे में क्या शान्ति मिलेगी, मिले द्वेष की बस क्रीड़ा॥
प्रभु सम हम भी इसे त्यागने, चंदन जल की धार करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

राज-पाठ सब पड़ा रहेगा, जब यमराज पुकारेगा।
साथ निभाएगा ना बेटा, कब निज रूप निहारेगा॥
प्रभु सम आतम वैभव पाने, अखंड अक्षत पुंज धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

काम भोग से मूर्छित होकर, अपना शील जला डाला।
अहो! व्याह बन्धन अपनाकर, निज पुरुषत्व गवां डाला॥
प्रभु सम निज रमणी अब वरने, प्रभु चरणों में पुष्प धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कण-कण भक्षण करके भी यह, भूख न संयम बिन मिटती।
बना बना सब खा डाला पर, आश न निज रस की दिखती॥
प्रभु सम निज के रसास्वाद को, सादर यह नैवेद्य धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

स्वारथ के रिश्ते नातों में, भेद ज्ञान की आँख मुंदी।
सो अज्ञान अंधेरा फैला, दर-दर भटके स्वयं सुधी॥
प्रभु सम निज का दर्शन करने, करें आरती दीप धरें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कर्मचन्द ने धर्मचन्द के, स्वच्छन्द होकर पथ रोके।
किं-कर्त्तव्य-विमूढ़ हुए हम, पाए बस केवल धोखे॥
निजानन्द हम प्रभु सम पाने, आज समर्पण धूप करें।
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

भोगों के संग्रह रक्षण में, अस्त व्यस्त अभ्यस्त रहे।
इन भोगों का फल क्या होगा, मात्र भोग में मस्त रहे॥
तजें भोग के योग आप सम, मिले मोक्ष फल भेंट करें।.
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं...।

मूल्यवान जग का यह वैभव, क्षणिक सुखी भर कर सकता।
किन्तु अनन्त सुखी बनने यह, तजने की आवश्यकता॥
दयानिधे! निज शक्ति प्रकट हो, अतः अर्घ्य यह भेंट करें॥
वासुपूज्य मल्लि नेमि पारस, वीर बालयति पाँच भजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

पंच बालयति नाथ के, गर्भों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, जन्मों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, दीक्षा के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, ज्ञानों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

पंच बालयति नाथ के, मोक्षों के कल्याण।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, हो नमोऽस्तु धर ध्यान॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं...।

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पंचबालयति जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

बाल ब्रह्मचारी प्रभो, तीर्थंकर जी पाँच।
कामजयी जयमालिका, रे मन गाके नाँच॥

(ज्ञानोदय)

तीर्थंकरों की कथा कहानी, हम तुम अच्छे से जाने।
जिनके शुभ चारित्र श्रवण कर, अपनी आतम पहचाने॥
ये सारे ही तीर्थंकर जी, पूर्ण चार पुरुषार्थ किए।
लेकिन हुए पाँच कुछ ऐसे, जो बस दो पुरुषार्थ किए॥१॥
वासुपूज्य प्रभु मल्लिनाथ हैं, नेमि पार्श्व प्रभु वीरा वे।
सिद्धांतों के अपवादी पर, हमको लगते हीरा से॥
राज-पाठ न रुचे इन्हीं को, बन बैठे भव वीरा हैं।
लगी न मेंहदी चढ़ी न हल्दी, सचमुच ये तो हीरा हैं॥२॥
जगतपूज्य हैं वासुपूज्य प्रभु, पूज्य बनाएँ भक्तों को।
शुद्धातम का पथ दिखला दें, विषयों के आसक्तों को॥
मोहमल्ल की शल्य मिटा के, निज-पर मोहित हो बैठे।
भक्तों का मन मोह लिया हम, तुम पर मोहित हो बैठे॥३॥
राजुल का दिल तोड़ नेमि ने, मुक्तिवधू से राग किया।
दया अहिंसा धर्म पालने, विषयों का सुख त्याग दिया॥

भय उपसर्ग विजेता बन के, कमठ शत्रु तक तार दिए।
वज्र पुरुष पारस को हम तो, नमोऽस्तु बारम्बार किए॥४॥
वर्तमान के वर्धमान हैं, शासननायक वीरा रे।
नाँव हमारी ना थामी तो, हम तो हुए अधीरा रे॥
आप बिना यह सकल विश्व तो, ब्रह्मचर्य बिन सुलग रहा।
बाल-ब्रह्मचारी साधक का, उत्सव जग से विलग रहा॥५॥
अतः आपसे यही प्रार्थना, जिसे भक्त बस कह सकता।
विश्वशान्ति को पुनः आपकी, परम-परम आवश्यकता॥
आप तथा सिद्धांत आपके, सबको पार लगाएंगे।
'सुव्रतसागर' गुरु 'विद्या' बिठा ले, निकट आपके आएंगे॥६॥

(सोरठा)

पाँचों बाल यतीश, करके नमोऽस्तु हम भजें।
पाके प्रभु आशीष, आत्म ब्रह्म से हम सजें॥

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पंचबालयति प्रभु करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, पंच बालयतिराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आचार्य श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय)

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आए, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रये हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापौ फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गए, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनौं नैं मारौ, कबऊँ पराये करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझादो, देव सबूरी करौ सुखी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

कबऊँ बना दव मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उकता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रये दुनियाँ में॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्...।

कामदेव तौ तुमसैं हारौ, मोय कुलच्छी पिटवाबै।
सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥
हाथ जोड़ कैं पाँव परे हम, गैल बता दो लड़बे की।
ये खौं जीतें मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लडुआ पेड़ा सब चाने।
लुचईं ठडूला खीच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥
इनसैं अब तौ भौत दुखी भये, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं...

दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रऔ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ये करिया कौ, तुमने करिया मौं कर दऔ।
ऊँसईं जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दऔ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...

खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौंनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कौंनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
येई सैं तौ चढ़ा रये हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाए, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला—१

(दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम कौ तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं, फैरा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥१॥
एकईं बिरियाँ ठाडे हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौंन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, प्यांरौ चारौ और चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥२॥
तुम बैरागी हौ निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गय, ये में का कैंसौ अचरज।
गुरु के संगै मात-पिता के, गुरु बन गय जौ है अचरज॥३॥

मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फेरत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नैं जावै।
कहूँ रमैं नैं जौ बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥ ४॥
कबउँ-कबउँ जौ मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्‌दी॥५॥
जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईंयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईंयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईंयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिंटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥६॥
महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शोभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गए छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥७॥
कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥
नौंने-नौंने ग्रन्थ रचा दय, भौत बना दय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फेरत हैं॥८॥
ये की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥
इतनौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
येई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कोऊ है नईंयाँ॥९॥

अब किरपा एसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँई मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टईं-झट्टईं तिरवा दो॥१०॥

ॐ ह्वूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥
विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥

(पुष्पांजलिं)

जयमाला—२ (दोहा)

विद्यागुरु की भक्ति में, धूप लगै नें ठण्ड।
जयमाला में रम रहौ, सांचउं बुन्देलखण्ड॥

(जोगीरासा)

दुनियाँ में सबसे न्यारी है, भारत भूम हमारी।
भारत में बुन्देलखण्ड की, का कैनें बलिहारी॥
जब लौं कौनउं समझ सकौ नें, ये की महिमा न्यारी।
तब लों माटी कूरा जैसी, लुटी-पिटी सी भारी॥१॥
लेकिन जा कैनात सुनें कें, घूरे के दिन फिरबें।
फिर जौ तौ बुन्देलखण्ड है, भाग्य काय नें चमकें॥

जितै कबउं मुनियों के दर्शन, मिलबौ बड़ौ कठिन थौ।
सुनौ इतईं तो चतुर्मास कौ, होवौ लगै सुपन सौ॥२॥
जाड़े में जब परै माइआ, कुकर-कुकर सब जाबें।
ज्वांर बाजरा कोदों खा कें, मौं करिया पर जाबें॥
गेहूँ मिलबौ बड़ौ कठिन थौ, फैली भूख गरीबी।
लगै दण्ड बुन्देलखण्ड जौ, दिखै नें कोउ करीबी॥३॥
महावीर सें अब लों जित्ते, मुनी अज्जका वीरा।
उनमें इक्के दुक्के भये हैं, बुन्देली के हीरा॥
लेकिन बुन्देली पै जबसें, पंइयां परे तुमारे।
साँची कै दउं ये माटी के, हो गए बारे-न्यारे॥४॥
भूख गरीबी सबरी मिट गई, कोउ दिखै नें दुखिया।
खण्ड-खण्ड बुन्देलखण्ड जौ, अखण्ड हो गऔ सुखिया॥
टलें फावड़ों से जड़ माया, चेतन धन का कईये।
बुन्देली में समौसरण कौ, देख नजारौ रइये॥५॥
बुन्देली के भाग्य विधाता, तुमें कैत जग सारौ।
भाग्य हमौरों कौ चमकइऔ, अब नें पल्ला झारौ॥
हम बुन्देली तुम बुन्देली, रिश्तौ गजब हमारौ।
सो बुन्देली चेला चेली, अर 'सुव्रत' खों तारौ॥६॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशगुण-सुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे जयमाला पूर्णार्घ्यं..

(दोहा)

बुन्देली सें का बँधें, विद्यागुरु के गान।
फिर भी नमोस्तु हम करें, करबै खों कल्यान॥

(पुष्पांजलिं...)

===

मुनि श्री सुव्रतसागर जी पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बचपन से हम ज्ञान बिना ही, भटक रहे बनके बच्चे।
जनम-जनम के पाप मिटाने, आए हैं बनने सच्चे॥
जन्म जरा दुख मरण नशाएँ, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये जल अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

भव की ज्वाला धधक रही है, झुलस रहे हैं खड़े-खड़े।
शीतल वाणी चंदन सम है, छाया पाने चरण पड़े॥
भव का ये संताप मिटाएँ, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु चंदन अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

क्षत-विक्षत यह जीवन अपना, कैसे इसे सँवारे हम।
व्रत संयम से रक्षित होने, तुमको रोज पुकारें हम॥
तुम जैसे सु-व्रत हम पाएँ, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु अक्षत अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सोना चाँदी रुपया पैसा, जिन्हें चाहिए दो उनको।
सुन्दर काया जिन्हें सुहाये, कामदेव कर दो उनको॥

तुमसे तुमको माँग रहे हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु हम पुष्प चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

व्यंजन बहुत तरह के भोगे, फिर भी तो होती इच्छा।
भूख मिटे ना प्यास मिटे ना, अब कैसे होगी दीक्षा॥
निज रस चखने दीक्षा धर लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु नैवेद्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

चेतन करें आप सम उज्ज्वल, जिससे चंदा शर्माये।
ज्ञान तेज इतना चमकाएँ, सूरज फीका पड़ जाए॥
अंतर्मन तुम सम उज्ज्वल हो, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये दीप जलाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं...।

संकट उपसर्गों में भी तुम, कर्म काटने चलते हो।
खिन्न न होते प्रसन्न रहते, समता धरकर खिलते हो॥
हम भी दुष्कर्मों को सह लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये धूप जलाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

अगर डोर तुम बन जाओ तो, हम पतंग बन उड़ लेंगे।
अगर आप पतवार बनो तो, भवसागर हम तिर लेंगे॥
सदा आपके साथ रहें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये फल अर्पित हैं, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥

गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सु-व्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

मुनिवर की पूजन करें, मन में अति हर्षाएँ।
नमोऽस्तु कर जयमालिका, आओ हम सब गाएँ॥

(शंभू)

हे मुनिवर तेरे चरणों में, हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो जिनशासन के बेटे हैं, हम उनको शीश झुकाते हैं॥
जो विद्या गुरु के शिष्य रहे, पर अपने भाग्य सितारे हैं।
ऐसे सुव्रतसागर मुनिवर, सचमुच ही हमको प्यारे हैं॥१॥
है ग्राम पीपरा जन्म लिया, उपकृत फिर सागर जिला किया।
पितु साबूलाल माँ चन्द्ररानी को, खुशियाँ देकर धन्य किया॥
भाई सुनील के लघु भ्राता, तीनों बहनों के हो प्यारे।
लौकिक शिक्षा भी उच्च कोटि की, कॉलिज में भी थे न्यारे॥२॥
जब सागर के भाग्योदय में, विद्या गुरुवर के दर्श किए।
तब अन्ठानवें में गुरुवर से, व्रत ब्रह्मचर्य 'राजेश' लिए॥
फिर कृपा बड़ेबाबा की पा, संघस्थ हुए फिर गमन किया।
नेमावर में विद्यागुरु ने, दे दीक्षा 'सुव्रत' बना दिया॥३॥
सु-व्रत पा सुव्रतसागर जी, अपने व्रत सुव्रत बना रहे।
अपनी मुनि चर्या पालन कर, अंतस में डुबकी लगा रहे॥
प्रभु की भक्ति में डूबे तो, विधान अनेकों रचा दिए।
श्री पूज्य बड़ेबाबा विधान रच, अतिशय बाबा के बता दिए॥४॥

जिनचक्र विधान में चौबीसों, जिनवर की महिमा दिखलाई।
श्री सिद्धचक्र अरिहन्तचक्र में, शुद्धातम सी झलकाई॥
भक्तामर एकीभाव और, कल्याणमंदिर विधान रचे।
रच समवसरण आदि अनेक, शायद कोई ना शेष बचे॥५॥
रच बुंदेली पूजन विधान, बुंदेली संत प्रसिद्ध बने।
भक्तों को भक्ति-अर्चना को, श्रीजिनवाणी के छन्द बने॥
ऐसे अनेक पूजा विधान रच, पद्यानुवाद कई बना रहे।
जिनका आश्रय पा भव्य जीव, खुद को धर्मात्मा बना रहे॥६॥
सुन स्वाध्याय प्रवचन इनके, संस्कारी रूप सज जाते हैं।
ऐसे बुंदेली संत हमें, जीवन का लक्ष्य बताते हैं॥
हे! मुनिवर 'सुव्रतसागरजी', हमको भी सु-व्रत दान करें।
'संजय' का नमोऽस्तु स्वीकारें, सुव्रत धर कल्याण करें॥७॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तुम जैसे हम भी धरें, विद्या के भण्डार।
विश्व शान्ति के भाव से, करें शान्ति जल धार॥

(शान्तये शान्तिधारा)

माँ जैसे बच्चे तुम्हें, करें सदा ही याद।
सो नमोऽस्तु सादर करें, देना आशीर्वाद॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आरती खण्ड

आरती–श्री पंचपरमेष्ठी

(लय–कैसे धरें मन धीरा...)

जिनवर की बोलौ जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
पहली आरति श्री अरिहन्ता-२, केवलज्ञानी जिन भगवन्ता-२
झूम-झूम गुण गाऔ रे, भाग्य अपनौ सँभारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
दूजी आरति सिद्ध जिनों की-२, मुक्त हुए मुनि तपोधनों की-२
करौ साधना सुमरौ रे, मंजिल खौं निहारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
तीजी आरति आचार्यों की-२, शिव राही-दाता आर्यों की-२
करौ अर्चना पूजौ रे, करनी तौ सुधारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
चौथी आरति उवझायों की-२, ज्ञान चरित पथ के रायों की-२
करौ उपासा सेवा रे, मिलै अपनौ उजारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
पाँचवी आरति साधु जनों की-२, आतम साधक तपोधनों की-२
करौ वन्दना संगत रे, आतम खौं निखारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....
छठवीं आरति जिनवाणी की-२, हितकारी जग कल्याणी की-२
चलौ गैल जिनभक्तों रे, आज्ञा उर में धारौ।
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥ जिनवर की....

आरती—श्री चौबीसों भगवान

श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥
वृषभ अजित शम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनचन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांसजिन, वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुंथू अर मल्ली, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों हों, मंगलमय मंगल भगवान्॥
श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥
निर्मोही निर्ग्रन्थ सभी हैं, किन्तु मोह लें सब संसार।
रहे दिगम्बर पूर्ण निरम्बर, फिर भी जिनके ग्रन्थ हजार॥
धर्म चक्र की धुरी यही तो, धारें तारणतरण जहाज।
भू नभ अम्बर से ऊँचे पर, करें भक्त के दिल पर राज॥
श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥
भूल-भुलैया भव की भँवरे, जिनमें हो हमसे भी भूल।
किन्तु हमें ना आप भुलाना, दे देना चरणों की धूल॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, भर-भर झोली दो वरदान।
'सुव्रतसागर' करें नमोऽस्तु, भक्त आरती करें प्रणाम॥
श्री चौबीसी की आरती उतारो मिलके।
चौबीसों भगवान् को निहारो मिलके॥

===

आरती–श्री आदिनाथ स्वामी

(लय : विद्यासागर की गुणआगर की)

आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥
नाभिराय श्री मरुदेवी के, गर्भ विषें प्रभु आए,
नगर अयोध्या जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए।
प्रभु जी, सब जन मंगल गाए॥
पुरुदेवा की, जिनदेवा की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ १॥
आदिकाल में बने स्वयंभू, धर्मध्वजा फहराए,
षट्कर्मों की शिक्षा देकर, मोक्षमार्ग बतलाए।
प्रभु जी, मोक्षमार्ग बतलाए॥
ब्रह्मेश्वर की, सर्वेश्वर की, हो जग-मग ज्योति जगाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ २॥
सारे जग से पूजित प्रभुवर, हम दर्शन को आए,
मन-वच-तन से आरती करके, झूम-झूम सिर नाये।
प्रभु जी, झूम-झूम सिर नाये॥
जिन स्वामी की, शिवधामी की, हो 'सुव्रत' दर्शन पाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ ३॥
आदीश्वर की, जगदीश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय के।
हम आज उतारें आरतिया॥

===

आरती–श्री शान्तिनाथ स्वामी

(लय : विद्यासागर की गुण...)

शान्तीश्वर की, परमेश्वर की, शुभ मंगल दीप सजाय हो,
हम आज उतारें आरतिया॥
विश्वसेन ऐरादेवी के गर्भ विषें प्रभु आए।
हस्तिनागपुर जन्म लिया था, सब जन मंगल गाए,
प्रभुजी, सब जन मंगल गाए।
तीर्थंकर की, क्षेमंकर की, शुभ मंगल दीप प्रजाल हो,
हम आज उतारें आरतिया॥ १॥
तीन-तीन पदवी के धारी, लोकालोक निहारी।
धर्मधार को पुनः बहाकर, सुखी किए संसारी,
प्रभुजी, सुखी किए संसारी।
जगस्वामी की, शिवधामी की, हो बार-बार गुण गायके,
हम आज उतारें आरतिया॥ २॥
दर्शन करके अतिशय सुनके, जीवन सफल बनाएँ।
भक्तिभाव से आरती करके, पुण्य शान्ति हम पाएँ,
प्रभुजी, पुण्य शान्ति हम पाएँ।
शुभकारी की, अघहारी की, धर 'सुव्रत' शीश झुकाय के,
हम आज उतारें आरतिया॥ ३॥
शान्तीश्वर की.....॥

===

आरती—श्री पार्श्वनाथ स्वामी

(लय : टन टना टन...)

झालर घंटी देख आरती, हम तो नाचें रे।
हम क्या नाचें बाबा सारी दुनियाँ नाचे रे।
झूम-झूम-झूम, झूम-झूम सारी दुनियाँ नाचे रे॥
भक्तों को भगवान् मिले हैं, प्यारे पारसनाथ।
जिनकी भक्ति करने सबका, झुक जाता है माथ।
ढोल मंजीरा ताली बाजे[२], घुँघरू बाजे रे॥
हम क्या नाचें ....॥ १॥
तुमने सारी दुनियाँ त्यागी, त्यागे कौन तुम्हें।
तभी शरण में हम आए हैं, देखो नाथ हमें।
सूरज चाँद सुरासुर तेरे[२], यश को बाँचें रे॥
हम क्या नाचें ....॥ २॥
अश्वसेन वामा के नन्दन, बालयति परमेश।
दुख संकट उपसर्गविजेता, धरे दिगम्बर भेष।
आतम परमातम के रसिया[२], तुम ही साँचे रे॥
हम क्या नाचें ....॥ ३॥
मुँह माँगा वरदान मिला है, जिन श्रद्धालु को।
तुमसे तुमको माँग रहे हम, दान दयालु दो।
'सुव्रत' की झोली भर दो बिन[२], परखे जाँचे रे॥
हम क्या नाचें ....॥ ४॥

===

आरती—श्री महावीर स्वामी

(लय : मेरा आपकी कृपा से...)

वीरा आपको नमन कर, तकदीर हम सँवारें।
हम आरती उतारें, प्रभु! आप भक्त तारें॥

सिद्धार्थ के कुँवर तुम, त्रिसला के हो सितारे।
कल्याण जग का करने, जिन रूप में पधारे।
हमको भी दो सहारा[२], हम भक्ति कर पुकारें॥ १॥

संसार के हितैषी, रसिया हो आतमा के।
तीरथ हो चलते-फिरते, वसिया चिदात्मा के।
मन में हमारे आओ[२], अखियाँ तुम्हें निहारें॥ २॥

घी दीप बाती ज्योति, तेरे द्वार पर जलाई।
भक्ति के रँग में रँग के, दुनियाँ दीवानी आई।
अंतर की ज्योति देना[२], बाहर की हम उजारें॥ ३॥

हम हैं अधूरे तुम बिन, पूरा हमें बना दो।
सुर गीत ताल दे के, 'सुव्रत' का सुर सजा दो।
दे गीत आत्मा का[२], दो मोक्ष की बहारें॥ ४॥

===

आरती—आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

(तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...)

गुरुवर की हो रई जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[२], ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[२]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
नगन दिगम्बर चारितधारी, ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी॥
जगत्-पूज्य परमेष्ठी रे; मोरी किस्मत सँवारो,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कैं 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥

===

गुरु मार्ग में
पीछे की हवा सम
हमें चलाते

आरती—मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

सुव्रतसागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें॥ सुव्रतसागरजी...
१. माँ चन्द्ररानी के राजेश दुलारे,
पिता साबूलाल की आँखों के तारे।
जन्मे हैं पीपरा ग्राम, आज थारी...॥
२. विद्या गुरुवर से पाकर दीक्षा,
बनकर मुनि जब पाई है शिक्षा।
करने चले हो कल्याण, आज थारी...॥
३. जगमग दीपक हाथों में लाएँ,
मंगल-मंगल महिमा को गाएँ।
करके नमोऽस्तु बार-बार, आज थारी...॥
४. सुव्रत को पालें, सुव्रत के दाता,
भक्ति में रचते हैं लाखों गाथा।
सब पर लुटाते अपना प्यार, आज थारी...॥

===

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया

लघु प्रतिक्रमण

हे भगवन्!, हे जिनेन्द्र देव!, हे अरिहन्त प्रभु! हे पंचपरमेष्ठी! हे नव देवता भगवन्! आपके श्री चरणों में बारम्बार नमोऽस्तु! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!

हे भगवन्! मैंने अब तक जितने भी पाप, अपराध, दोष किए हों या जाने-अनजाने में हो गए हों उन सभी दोषों का क्षमायाचनापूर्वक प्रतिक्रमण करना चाहता हूँ।

हे भगवन्! पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक रूप एकेन्द्रिय, द्वि-इन्द्रिय, त्रि-इन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-संज्ञी पंचेन्द्रिय आदि त्रस-स्थावर किसी भी जीव का घात किया हो, कराया हो, करने वाले की अनुमोदना की हो, मन-वचन-काय से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! हिंसा-झूठ-चोरी-कुशील-परिग्रह रूप पाँच पापों में, जुआ-माँसभक्षण-मद्यपान-शिकार-चोरी-परस्त्रीसेवन-वेश्यागमन रूप सप्त व्यसनों में, क्रोध-मान-माया-लोभपूर्वक, मन-वचन-काय-समरम्भ-समारम्भ-आरम्भ-कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! मद्य-माँस-मधुत्याग एवं पंच उदम्बर फलों के त्याग रूप अष्टमूलगुण का पालन करते हुए मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! तीन कुलाचार का पालन करते हुए देवदर्शन करने में-रात्रिभोजन त्याग में, पानी छानने की विधि में मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! वीतरागी देव-जिनशास्त्र-दिगम्बर गुरु, पंचपरमेष्ठी, नवदेवताओं की विनय करने में प्रमाद वश, अज्ञानतावश मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

हे भगवन्! मेरे द्वारा दिन भर में आने-जाने में, उठने-बैठने में, खाने-पीने में, बोलने-चालने में, रखने-उठाने में, लेने-देने में, सोने-जागने में, पढ़ने-लिखने में, घर-गृहस्थी के कार्यों में, नौकरी-धंधे में, खेती-वाड़ी में, भवन-वास्तु में, टी.व्ही.-मोबाइल-कम्प्यूटर आदि भौतिक साधनों के प्रयोग में और भी जो जाने-अनजाने में प्रमाद वश, अज्ञानतावश, मन-वचन-काय, कृत-कारित-अनुमोदना से जो भी दोष लगे हों वे सब मिथ्या हों।

मैं अपने समस्त प्रत्यक्ष-परोक्ष दोषों की आलोचना करता हूँ, निन्दा करता हूँ, गर्हा करता हूँ, प्रतिक्रमण करता हूँ, प्रायश्चित्त करता हूँ, कायोत्सर्ग करता हूँ। (नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

हे भगवन्! जब तक मुझे मोक्ष की प्राप्ति ना हो तब तक आपके चरणकमल मेरे हृदय में मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे ऐसी भावना भाता हूँ।

हे भगवन्! मेरे दुखों का क्षय हो, कर्मों का क्षय हो, बोधि (रत्नत्रय) की प्राप्ति हो, सुगति गमन हो, समाधिमरण हो, जिनगुण की प्राप्ति हो, ऐसी मेरी भावना है।

अंत में यही भावना भाता हूँ-

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निज मंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥

===

आलोचना पाठ (नवीन)

(दोहा)

चौबीसों प्रभु को नमूँ, परमेष्ठी जिनराज।
कर लूँ निज आलोचना, आत्म शुद्धि के काज॥१॥

(सखी)

हे परम दयालू भगवन्, मैं करके नमोऽस्तु दर्शन।
चरणों में अरज लगाऊँ, कैसे निज दोष नशाऊँ॥२॥
मैं होकर क्रोधी मानी, कपटी लोभी अज्ञानी।
दिन भर चर्या करने में, आना-जाना करने में॥३॥
पढ़ने-लिखने लड़ने में, निंदा ईर्ष्या करने में।
सुख-दुख रोने-हँसने में, या छींक जँभाई खांसी में॥४॥
सोने-जगने सपने में, मल-मूत्र थूक तजने में।
चूल्हा चक्की चौका में, बर्तन झाड़ू पौंछा में॥५॥
भोजन जल-बिलछानी में, धोने व न्हवन पानी में।
शैम्पू सोड़ा साबुन में, फैशन अंजन-मंजन में॥६॥
या टी. व्ही. मोबाइल में, या नेट मनोरंजन में।
कृषि नौकरी धंधे में, जो हुए व्यसन अंधे में॥७॥
या दवा कीटनाशक में, बिजली मकान पावक में।
हिंसा असत्य चोरी में, अब्रह्म परिग्रह ही में॥८॥
फल पंच उदम्बर खाके, या मद्य-माँस-मधु पाके।
जो नहीं मूलगुण धारे, बाईस अभक्ष्य अहारे॥९॥
या नित्य देव दर्शन में, या कभी रात्रि भोजन में।
जल पिया कभी अनछाना, त्रय [१]कुलाचार न जाना॥१०॥

---

१. नित्य देवदर्शन, रात्रिभोजन का त्याग, बिना छने पानी का त्याग।

जो लेकर नियम न पाले, प्रतिकूल धरम के चाले।
या देव-शास्त्र-गुरुओं में, या अपने या औरों में॥११॥
मैंने कर पापाचारी, जो करुणा ना हो धारी।
उससे जो जीव मरे हों, या पीड़ित घात करे हों॥१२॥
या पर से पाप कराये, या अनुमोदन मन भाए।
वह मन-वच-तन के द्वारे, टल जाएँ कषाय सारे॥१३॥
पच्चीस दोष दर्शन के, या ज्ञान चरित आगम के।
दिन रात कभी भी कैसे, जाने अनजाने जैसे॥१४॥
जो पाप हुए हों मुझसे, प्रभु आप बचालो उनसे।
धिक्! धिक्! धिक्कारो मुझको, प्रभु क्षमादान दो मुझको॥१५॥
सीता द्रोपदि या मैना, या अंजन चंदन मैं ना।
पर नाथ! भक्त तेरा हूँ, सो शुद्धि आप सम चाहूँ॥१६॥
बस बोधि समाधि हो मेरी, हो छत्रच्छाया तेरी।
कर 'सुव्रत' अब ना देरी, प्रभु! शरण न छूटे तेरी॥१७॥

(दोहा)

वीतराग निर्दोष हैं, परमेष्ठी जिनराज।
बन जाऊँ निर्दोष मैं, सो नमोऽस्तु हो आज॥

===

आलोचना से
लोचन खुलते है
सो स्वागत है।

समाधि भावना

भगवन् सदैव मुझ पै, हो छत्र छाया तेरी।
चरणों में आपके ही, होवे समाधि मेरी॥ हो छत्र-छाया तेरी...
१. दर्शन तुम्हारा करके, सिर भी तुम्हें झुकाऊँ।
शास्त्रों का पान करके, तुम सा ही रूप पाऊँ॥
सत्संग करने मुझसे, होवे कभी न देरी। चरणों...
२. पर के न दोष बोलूँ, बोलूँ मधुर वचन मैं।
आगम का ले सहारा, अपना करूँ मनन मैं॥
जब तक न मोक्ष पाऊँ, रख लेना लाज मेरी। चरणों...
३. जब भी मरण हो मेरा, संन्यास से मरण हो।
मुनियों के साथ गुरु के, चरणों की बस शरण हो॥
जिनवाणी माँ की गोदी, छवि सामने हो तेरी। चरणों...
४. बचपन से आपके जो, चरणों की की हो सेवा।
यदि चाहते उसी का, बस फल यही दो देवा॥
णमोकार जपते-जपते, सल्लेखना हो मेरी। चरणों...
५. जब तक मुझे मिले ना, निर्वाण की नगरिया।
तब तक चरण तुम्हारे, मेरे मन में हो सँवरिया॥
मेरा हृदय न छोड़े, चरणों की छाँव तेरी। चरणों...
६. बस एक भक्ति तेरी, दुख संकटों को हरती।
बोधि समाधि दे के, सुख सम्पदा भी भरती॥
ओंकारमय बना दो, हर श्वाँस नाथ मेरी। चरणों...
७. जयवंत हो जिनशासन, हो जय-जिनेन्द्र नारा।
निर्ग्रन्थ पंथ धारूँ, तजूँ पाप पंथ सारा॥
'सुव्रत' की प्रार्थना ये, बरसे कृपा घनेरी। चरणों...

===

सुप्रभात स्तोत्र (भावानुवाद)

(दोहा)

गर्भ जन्म तप ज्ञान वा, भजें मोक्ष कल्याण।
सो मेरा सुप्रभात हो, मंगलमय निर्वाण॥१॥

(चौपाई)

जिनके चरण देव जन छूते, दुर्द्धर कर्म जिन्हों के छूटे।
वृषभ अजित यों शम्भव स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥२॥
छत्र चमर से शोभित नामी, सुमतिनाथ अभिनन्दन स्वामी।
पद्म प्रभु द्युति अरुण समानी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥३॥
नाथ सुपारस हरियल ज्योति, चन्द्रप्रभु ज्यों चाँदी मोती।
पुष्पदंत द्युति फटिक समानी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥४॥
तप्त स्वर्णसम शीतल नाथा, प्रभु श्रेयांस हरे विधि गाथा।
वासुपूज्य तनु पुष्प ललामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥५॥
विमलनाथ प्रभु दर्प निवारी, प्रभु अनन्त सुख धीरज धारी।
कर्म रहित प्रभु धर्म सुधामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥६॥
स्वर्णिम शान्तिनाथजी प्यारे, कुन्थुनाथ करुणा शृंगारे।
अरहनाथ जिन तीरथ स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥७॥
मल्लिनाथ मद मोह निवारी, जय सुव्रत प्रभु शिव सुख धारी।
जय नमिनाथ शान्ति के स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥८॥
नेमिनाथ साँवलिया नेता, पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता।
वर्द्धमान जिनशासन स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥९॥
श्वेत लाल हरियल प्रभु पीले, शाश्वत सुख के धाम सुनीले।
रहे एक सौ सत्तर स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि॥१०॥

(दोहा)

सुबह-सुबह नवदेव को, कर नमोऽस्तु धर ध्यान।
सहयोगी नक्षत्र हों, नश जाता अज्ञान॥
सो 'सुव्रत' सुप्रभात को, भजते प्रभु चौबीस।
कर्म हरें मंगल करें, अतः झुकाएँ शीश॥

===

दर्शन पाठ

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पापनाशनम्।
दर्शनं स्वर्गसोपानं, दर्शनं मोक्षसाधनम्॥ १॥
दर्शनेन जिनेन्द्राणां, साधूनां वन्दनेन च।
न चिरं तिष्ठते पापं, छिद्रहस्ते यथोदकम्॥ २॥
वीतराग मुखं दृष्ट्वा, पद्मरागसमप्रभम्।
जन्मजन्मकृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति॥ ३॥
दर्शनं जिनसूर्यस्य, संसारध्वान्त नाशनम्।
बोधनं चित्त पद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाशनम्॥ ४॥
दर्शनं जिनचन्द्रस्य, सद्धर्मामृत - वर्षणम्।
जन्म-दाह-विनाशाय, वर्धनं सुख-वारिधेः॥ ५॥
जीवादितत्त्व प्रतिपादकाय, सम्यक्त्व मुख्याष्टगुणार्णवाय।
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय, देवाधिदेवाय नमो जिनाय॥ ६॥
चिदानन्दैक - रूपाय, जिनाय परमात्मने।
परमात्मप्रकाशाय, नित्यं सिद्धात्मने नमः॥ ७॥
अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम।
तस्मात्कारुण्यभावेन, रक्ष रक्ष जिनेश्वरः॥ ८॥
नहि त्राता नहि त्राता, नहि त्राता जगत् त्रये।
वीतरागात्परो देवो, न भूतो न भविष्यति॥ ९॥
जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्ति-र्दिनेदिने।
सदामेऽस्तुसदामेऽस्तु,सदामेऽस्तु भवेभवे॥ १०॥
जिनधर्मविनिर्मुक्तो, मा भवेच्चक्रवर्त्यपि।
स्याच्चेटोऽपिदरिद्रोऽपि, जिनधर्मानुवासितः॥ ११॥
जन्मजन्मकृतं पापं, जन्मकोटिमुपार्जितम्।
जन्ममृत्यु-जरा-रोगं, हन्यते जिन-दर्शनात्॥ १२॥

अद्याभवत् सफलता नयन -द्वयस्य,
देव! त्वदीय चरणाम्बुज वीक्षणेन।
अद्य त्रिलोक-तिलक ! प्रतिभासते मे,
संसार-वारिधिरयं चुलुक-प्रमाणः॥१३॥

दर्शन पाठ

(दोहा)

दर्शन प्रभु अर्हंत का, दर्शन पाप नशाय।
दर्शन सीढ़ी स्वर्ग की, दर्शन मोक्ष दिलाय॥१॥
जिन-दर्शन मुनि वन्दना, हरे पाप दुख पीर।
छिद्र सहित ज्यों अंजली, खोती अपना नीर॥२॥
पद्मरागमणि कान्ति सम, वीतराग मुख देख।
दर्शन से बहु जन्म के, नशते पाप अनेक॥३॥
दर्शन श्री जिन-सूर्य का, भव-तम करता नाश।
हृदय कमल विकसित करे, सारे अर्थ प्रकाश॥४॥
दर्शन श्री जिन-चन्द्र का, धर्मामृत बरसाय।
हरे दाह भव जन्म का, सुख का सिन्धु बढ़ाय॥५॥
प्रतिपादक सब तत्त्व के, गुणसागर मय आठ।
नगन शान्त जिन रूप को, सदा झुकाऊँ माथ॥६॥
चिदानन्द परमातमा, एक जिनेन्द्री रूप।
दिग्दर्शक परमात्म के, नमूँ सिद्ध शिव रूप॥७॥
अन्य शरण मेरी नहीं, मात्र शरण जिन नाथ।
करुणा कर रक्षा करो, मेरी रक्षा आप॥८॥
त्रय जग में तुम सा नहीं, रक्षक त्राता ठौर।
वीतराग सा देव भी, हुआ न होगा और॥९॥

भव-भव में प्रतिदिन रहे, श्री जिन-भक्ति सदैव।
नित मुझमें जिन-भक्ति हो, हो जिन-भक्ति सदैव॥१०॥
मुझे बिना जिन-धर्म के, चक्री की ना आश।
भले दुखी दारिद रहूँ, पर जिन-धर्म निवास॥११॥
जनम-जरा-मृतु रोग वा, जनम-जनम के पाप।
प्राप्त करोड़ों अघ नशें, जिन-दर्शन से आप॥१२॥

(ज्ञानोदय)

नाथ! आप के पद कमलों के, पावन दर्शन आज किए।
जिससे मेरे प्यासे नयना, सफल हुए गुण-सुधा पिए॥
तीन लोक के तिलक जिनेश्वर, आज मुझे लगता एसा।
मेरा खारा भवसागर अब, शेष बचा चुल्लू भर सा॥१३॥

===

श्री भक्तामर स्तोत्र

(वसन्ततिलका)

भक्तामर - प्रणत - मौलि - मणि -प्रभाणा-
मुद्योतकं दलित - पाप - तमो - वितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिन - पाद - युगं युगादा-
वालम्बनं भव - जले पततां जनानाम्।।१॥

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय - तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि - पटुभिः सुरलोक - नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्- त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥२॥

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित - पाद - पीठ!
स्तोतुं समुद्यत - मतिर्विगत - त्रपोऽहम्।

बालं विहाय जल -संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥३॥

वक्तुं गुणान्गुण - समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान् ,
कस्ते क्षमः सुर - गुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल - पवनोद्धत - नक्र-चक्रम्,
को वा तरीतुमलमम्बु-निधिं भुजाभ्याम्॥४॥

सोऽहं तथापि तव भक्ति - वशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत - शक्ति - रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म - वीर्य - मविचार्य मृगी मृगेन्द्रम्
नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम्॥५॥

अल्प- श्रुतं - श्रुतवतां परिहास धाम,
त्वद्-भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु- कलिका-निकरैक -हेतुः॥६॥

त्वत्संस्तवेन भव - सन्तति-सन्निबद्धम्,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त-लोक - मलि -नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु- भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्॥७॥

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद -
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु ,
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः॥८॥

आस्तां तव स्तवन - मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्सङ्कथाऽपि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि॥९॥

नात्यद्-भुतं भुवन - भूषण! भूत-नाथ!,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त - मभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥

दृष्ट्वा भवन्त मनिमेष - विलोकनीयम्,
नान्यत्र - तोष- मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर - द्युति - दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ?॥११॥

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणुभिस्-त्वम्,
निर्मापितस्- त्रि-भुवनैक - ललाम-भूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान- मपरं न हि रूप-मस्ति॥१२॥

वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग-नेत्र-हारि,
निःशेष - निर्जित - जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलङ्क - मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाश-कल्पम्।।१३॥

सम्पूर्ण- मण्डल-शशाङ्क - कला-कलाप-
शुभ्रा गुणास्-त्रि-भुवनं तव लङ्घयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रि-जगदीश्वर नाथ-मेकम्,
कस्तान् निवारयति सञ्चरतो यथेष्टम्॥१४॥

चित्रं - किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्ग-नाभिर्-
नीतं मनागपि मनो न विकार - मार्गम्।
कल्पान्त - काल - मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्॥१५॥

निर्धूम - वर्ति - रपवर्जित - तैल-पूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रय-मिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानाम्,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः॥१६॥

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्-जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध - महा- प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र ! लोके॥१७॥

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारम्,
गम्यं न राहु - वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्पकान्ति,
विद्योतयज्-जगदपूर्व- शशाङ्क-बिम्बम्॥१८॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेन्दु- दलितेषु तमः -सु नाथ!
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनी जीव-लोके,
कार्यं कियज्जल - धरै-र्जल-भार-नम्रैः॥१९॥

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशम्,
नैवं तथा हरि - हरादिषु नायकेषु।

तेजो स्फुरन् मणिषु याति यथा महत्त्वम्,
नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥२०॥

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि॥२१॥

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥२२॥

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्य-गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥२३॥

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माणमीश्वर - मनन्त - मनङ्ग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित - योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥२४॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित - बुद्धि-बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन-त्रय- शङ्करत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग विधेर्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि॥२५॥

तुभ्यं नमस्-त्रिभुवनार्ति - हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल - भूषणाय।
तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय॥२६॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश!
दोषै - रुपात्त - विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि॥२७॥

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रितमुन्मयूख -
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत्- किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवेरिव पयोधर - पार्श्ववर्ति॥२८॥

सिंहासने मणि - मयूख - शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् - विलस - दंशुलता-वितानम्
तुङ्गोदयाद्रि - शिरसीव सहस्र-रश्मेः ॥२९॥

कुन्दावदात - चल - चामर-चारु-शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत - कान्तम्।
उद्यच्छशाङ्क - शुचिनिर्झर - वारि -धार-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥३०॥

छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित - भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ता-फल - प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥३१॥

गम्भीर - तार-रव-पूरित - दिग्विभागस्-
त्रैलोक्य-लोक - शुभ-सङ्गम-भूति-दक्षः।
सद्धर्म - राज - जय - घोषण - घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥३२॥

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारिजात-
सन्तानकादि - कुसुमोत्कर - वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद - बिन्दु- शुभ - मन्द - मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥३३॥

शुम्भत्-प्रभा- वलय-भूरि - विभा-विभोस्ते,
लोक - त्रये - द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ती।
प्रोद्यद्-दिवाकर - निरन्तर - भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोमसौम्याम्॥३४॥

स्वर्गापवर्ग - गम-मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्त्व - कथनैक - पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्य- ध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः॥३५॥

उन्निद्र - हेम - नव-पङ्कज - पुञ्ज-कान्ती,
पर्युल्-लसन्-नख - मयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति॥३६॥

इत्थं यथा तव विभूति- रभूज् - जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन - विधौ न तथा परस्य।
यादृक् - प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्-कुतो ग्रहगणस्य विकासिनोऽपि॥३७॥

श्च्यो-तन् -मदाविल-विलोल-कपोल मूल,
मत्त- भ्रमद्- भ्रमर - नाद - विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभमिभ - मुद्धत - मापतन्तम्
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्॥३८॥

भिन्नेभ-कुम्भ- गल-दुज्ज्वल - शोणिताक्त,
मुक्ता - फल- प्रकरभूषित - भूमि - भागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते॥३९॥

कल्पान्त-काल - पवनोद्धत - वह्नि -कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल - मुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख - मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्॥४०॥

रक्तेक्षणं समद - कोकिल - कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन - मुत्फण - मापतन्तम्।
आक्रामति क्रम - युगेण निरस्त - शङ्कस्-
त्वन्नाम - नागदमनी हृदि यस्य पुंसः॥४१॥

वल्गत् - तुरङ्ग - गज - गर्जित - भीमनाद,
माजौ बलं बलवता - मपि - भूपतीनाम्।
उद्यद् - दिवाकर - मयूख - शिखापविद्धम्
त्वत्कीर्तनात्तम - इवाशु भिदामुपैति॥४२॥

कुन्ताग्र-भिन्न - गज - शोणित - वारिवाह,
वेगावतार - तरणातुर - योध - भीमे।

युद्धे जयं विजित – दुर्जय – जेय – पक्षास्–
त्वत्पाद–पङ्कज – वनाश्रयिणो लभन्ते॥४३॥

अम्भोनिधौ क्षुभित – भीषण – नक्र – चक्र–
पाठीन–पीठ–भय–दोल्वण – वाडवाग्नौ।
रङ्गत्तरङ्ग –शिखर–स्थित – यान – पात्रास्–
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्–व्रजन्ति॥४४॥

उद्भूत – भीषण – जलोदर – भार – भुग्नाः,
शोच्यां दशा–मुपगताश्–च्युत–जीविताशाः।
त्वत्पाद–पङ्कज – रजो–मृत – दिग्ध – देहाः,
मर्त्या भवन्ति मकर–ध्वज–तुल्यरूपाः॥४५॥

आपाद – कण्ठमुरु – शृङ्खल – वेष्टिताङ्गा,
गाढं–बृहन्–निगड – कोटि निघृष्ट – जङ्घाः।
त्वन्–नाम – मन्त्र – मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत – बन्ध–भया भवन्ति॥४६॥

मत्त–द्विपेन्द्र – मृग–राज – दवानलाहि–
संग्राम–वारिधि–महोदर – बन्ध –नोत्थम्।
तस्याशु नाश – मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव–मिमं मतिमान–धीते॥ ४७॥

स्तोत्र–स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्,
भक्त्या मया रुचिर–वर्ण – विचित्र–पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ – गता– मजस्रम्,
तं मानतुङ्ग–मवशा–समुपैति लक्ष्मीः॥४८॥

===

भक्तामर भाषा

(चौपाई)

भक्तामर की मणि चमकाएँ, पाप अंध विस्तार नशाएँ।
भव जल पतितों के अवलंबन, उन जिन पद को सम्यक् वन्दन॥१॥
बुद्धि कला जिन श्रुत से पाके, जगत मनोहर गीत रचा के।
सुरपति कहें छन्द आदि को, मैं ध्याऊँगा उन आदि को॥२॥
जिन चरणा सुर पूजित मानें, मैं उद्यत उनके गुण गाने।
ज्यों लज्जा बिन शिशु की हठता, कौन चन्द्र जल बिम्ब पकड़ता॥३॥
गुण समूह हैं चंदा जैसे, सुरपति उन्हें कहेगा कैसे।
ज्यों सागर तूफ़ान उठेगा, कौन बाहु से वो तैरेगा॥४॥
भक्ति भाव वश दशा हमारी, भक्ति शक्ति बिन करूँ तुम्हारी।
जैसे हिरणी बिना विचारे, शिशु रक्षा को शेर पछाड़े॥५॥
ज्ञानी हँसी उड़ाएँ मेरी, फिर भी भक्ति करूँ मैं तेरी।
ज्यों वसंत में मौर देखकर, कोयल बोले मौन खोलकर॥६॥
रात अँधेरा जग को ढाँके, देख सूर्य किरणों को काँपे।
वैसे भव-भव पाप हुए जो, तव संस्तव से नाश हुए वो॥७॥
अल्प बुद्धि से मैं शुरु कर लूँ, छन्दबद्ध प्रभु भक्ति कर लूँ।
प्रभु प्रभाव से जग हर लेगा, सचमुच मोती सा चमकेगा॥८॥
सूर्य दूर पर किरणें पाते, कमल सरोवर के खिल जाते।
प्रभु संस्तव उसका क्या कहना, केवल कथा हरे भव भ्रमणा॥९॥
भूतनाथ! भूषण! ना विस्मय, पूजक पूज्य बना तुम सम जय।
आखिर उससे कौन प्रयोजन, आश्रित को जो ना दे निज धन॥१०॥
क्षीर सिंधु का पी जल मीठा, कौन क्षार का पिएगा तीखा।
अपलक दर्शन योग्य तुम्हीं हो, तुमको देख नजर न कहीं हो॥११॥
सुन्दर शान्त राग रुचि द्वारा, जिन अणुओं ने तन श्रृंगारा।

भू पर वे अणु उतने पूजे, अतः आप सम कोई न दूजे॥१२॥
कहाँ प्रभु मुख जगत लुभाए, जीते सब जग की उपमाएँ।
और कहाँ वह दागी चंदा, दिन में पड़ता फीका मंदा॥१३॥
पूर्ण चन्द्र सम गुण गण तेरे, त्रय जग लाघें सब में डेरे।
जो पाएँ प्रभु चरण शरण को, रोके कौन उन्हें विचरण को॥१४॥
प्रलय काल से पर्वत काँपे, पर क्या सुमेरु हिले जरा से।
यौं सुरियों के नाच देख के, अचरज क्या प्रभु कभी न डिगते॥१५॥
धुआँ बाति बिन तेल उजाले, त्रय जग रोशन करने वाले।
जिसे आँधियां बुझा न पाएँ, आप अलौकिक दीप कहाएँ॥१६॥
अस्त न होता राहु न डसता, जिन प्रभाव को मेघ न ढकता।
युगपद त्रय जग प्रभु दिखलाएँ, महिमा अधिक सूर्य से पाएँ॥१७॥
राहु डसे ना दिव्य प्रकाशी, मेघ ढके ना मोह विनाशी।
प्रभु का मुख उज्ज्वल चंदा सा, जगतप्रकाशी आनंदा सा॥१८॥
काम हुआ जब फसलों का है, तो क्या काम बादलों का है।
अंध चन्द्र मुख प्रभु यों नाशे, तो क्या सूरज क्या चंदा से॥१९॥
चमक रही मणियों में जैसे, काँच किरण में क्या हो वैसे।
ऐसे ज्ञान आप में शोभे, पर देवों में क्या वह होवे॥२०॥
पर दर्शन मैं श्रेष्ठ बताऊँ, पर संतोष आप में पाऊँ।
दर्शन से क्या-क्या मैं पाऊँ, पर भव में पर में न लुभाऊँ॥२२॥
परम पुरुष मानें मुनि नेता, पर तुम रवि सम तिमिर विजेता।
मृत्युंजय हों तुमको पाकर, मोक्ष-मोक्ष पथ तुमसे ना पर॥२३॥
अव्यय अचिंत्य असंख्य विभु हो, ब्रह्मा अनन्त अनंग केतु हो।
एकानेक विदित योगीश्वर, तुम्हें कहें मुनि शुचि ज्ञानीश्वर॥२४॥
देव पूज्य हो बुद्ध स्वरूपी, जग सुखदाता शंकर रूपी।
शिवमग दाता तुम्ही विधाता, तुम पुरुषोत्तम हो विख्याता॥२५॥

जग दुख हरता तुम्हें नमोऽस्तु, जग के भूषण तुम्हें नमोऽस्तु।
जग परमेश्वर तुम्हें नमोऽस्तु, भव जल शोषक तुम्हें नमोऽस्तु॥२६॥
जब गुणगण ने साथ न पाया, क्या विस्मय तुमको अपनाया।
किन्तु दोष जो पर में टिकते, प्रभु में सपने में ना दिखते॥२७॥
ऊँची किरणें अंध विनाशी, बादल दल के निकट निवासी।
सुन्दर प्रभु तन सूरज जैसा, अशोक तरुतल शोभित एसा॥२८॥
सिंहासन मणि किरणों जैसा, उस पर प्रभुतन सोने जैसा।
यों लगता ज्यों उदयाचल से, सूर्य उगा हो पूर्ण प्रभा ले॥२९॥
कुंदपुष्प सम धवल चँवर हैं, मध्य सुनहरे प्रभु सुंदर हैं।
यों लगता ज्यों सुरगिरि तट पर, चंदा सम झरने हों झर-झर॥३०॥
सूर्य ताप हर ऊँचे होवें, मणियों की लड़ियों मय शोभें।
तीन छत्र चंदा सम भाएँ, त्रय जग के तुम नाथ बताएँ॥३१॥
उच्च स्वरोंमय हर दिश गूँजें, शुभ संगम को त्रय जग पूजें।
दुंदुभि बाजा यथा आपका, धर्मराज की विजय पताका॥३२॥
पारिजात सन्तानक आदि, दिव्य पुष्प जल-कण इत्यादि।
मंद दिव्य पुष्पों की वर्षा, लगे दिव्य वचनामृत वरसा॥३३॥
उदित हो रहे सूर्य बहुत से, उज्ज्वल शीतल चंदा जैसे।
त्रय जग की सुन्दरता जेता, प्रभु भामण्डल रात्रि विजेता॥३४॥
स्वर्ग मोक्षपथ की दिग्दर्शन, धर्म तत्त्व कहने में सक्षम।
विशद अर्थ हर भाषा रूपी, दिव्यध्वनि ओंकार स्वरूपी॥३५॥
नये सुनहरे कमलों जैसे, नख की किरणें चमकें ऐसे।
चरण कमल प्रभु जहाँ जमाएँ, वहीं देवगण कमल रचाएँ॥३६॥
इस विधि वैभव दिव्य ध्वनि का, हुआ आपका नहीं किसी का।
तम हर सूरज कान्ति जैसी, तारों गण की ज्योति न वैसी॥३७॥

मद् मैले गालों से झरता, क्रोध भ्रमर गूँजों से बढ़ता।
यों ऐरावत गज हो आगे, तो प्रभु शरणागत ना भागे॥३८॥
जो फाड़े गज गंडस्थल को, गजमुक्ता से भूषित थल को।
ऐसा सिंह भी निज पंजों से, बोल सके ना जिन भक्तों से॥३९॥
अंगारों सी आग धधकती, प्रलयकाल से खूब भभकती।
एसी आग अगर लग जाए, प्रभु कीर्तन जल शीघ्र बुझाए॥४०॥
कोयल के कंठों सा काला, क्रुद्ध नयन उठते फण वाला।
ऐस नाग अभय हो लाँघें, प्रभु की मणी हृदय जो राखें॥४१॥
जहाँ अश्व गज की चिंघाड़ें, जहाँ शत्रु रण में ललकारें।
प्रभु कीर्तन से यूँ रिपु भागें, अंध सूर्य किरणें ज्यों नाशें॥४२॥
फाड़ गए गज योद्धा भाले, रक्त मेघ में दौड़ने वाले।
ऐसे रण में शत्रु हराएँ, जो प्रभु पद पंकज वन ध्याएँ॥४३॥
मगरमच्छ मय वड़वानल हो, फिर पाठीन तरंगित जल हो।
यदि जलयान वहीं फँस जाएँ, तो प्रभु सुमरण कर तट पाएँ॥४४॥
रोग जलोदर कमर झुकाए, जो जीने की आश गँवाए।
प्रभु चरणामृत पा ऐसे नर, कामदेव सम होवें सुन्दर॥४५॥
बड़ी साँकलों से बाँधा हो, ऐड़ी चोटी तक जकड़ा हो।
पैर छिलें उनकी रगड़न से, शीघ्र टलें प्रभु नाम मंत्र से॥४६॥
ये संस्तव मतिमान पढ़े जो, शेर युद्ध गज भय न उसे हो।
सिन्धु महोदर बन्धन के भय, सर्प दवानल वो कर लें जय॥४७॥
मैंने बुनी भक्ति भावों से, ये जो माला गुणपुष्पों से।
इसको जो नित कंठ धरेगा, मानतुंग सम लक्ष्मी वरेगा॥४८॥

(दोहा)

संस्कृत भक्तामर रचें, 'मानतुंग' गुण गाएँ।
'सुव्रत' रच चौपाईयाँ, आदिनाथ प्रभु ध्याएँ॥

===

महावीराष्टक स्तोत्र

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोन्तरहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो भानुरिव यो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥१॥
अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्द-रहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमति।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वातिविमला,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥२॥
नमन्नाकेन्द्राली-मुकुटमणि-भा-जाल-जटिलं,
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्ज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥३॥
यदर्चा-भावेन प्रमुदित - मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगण-समृद्धः सुख-निधि।
लभन्ते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥४॥
कनत्स्वर्णाभासोप्यपगत - तनुर्ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपतिवरसिद्धार्थतनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुतगतिर्,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥५॥
यदीया वाग्गंगा विविधनय कल्लोलविमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।

इदानीमप्येषा बुधजनमरालैः परिचिता,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥६॥
अनर्वारोद्रेकस्-त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन् नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥७॥
महामोहातङ्क - प्रशमन - पराकस्मिकभिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित - महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां भव - भयभृतामुत्तमगुणो,
महावीरस्वामी नयनपथगामी भवतु मे॥८॥
महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्॥९॥

===

प्रश्नों से परे
अनुत्तर हैं उन्हें
मेरे नमन!

महावीराष्टक स्तोत्र (भावानुवाद)

(चौपाई)

लोकालोक झलकते ऐसे, जिनचेतन में दर्पण जैसे।
सूरज सम जो पथ दें ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥१॥
अपलक लाल न जिनके नयना, क्रोध रहित भक्तों के गहना।
मूरत परम शान्त निज-ध्यानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥२॥
जिनको पूजें सुर मणिमाला, जिनकी याद हरे भव-ज्वाला।
जिनका सुमरण शीतल पानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥३॥
मेढ़क देव बना पूजन कर, तो जिन भक्त मोक्ष पाएँ फिर।
इसमें क्या आश्चर्य कहानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥४॥
तन है फिर भी ज्ञान सहित हैं, जन्म रहित सिद्धारथ सुत हैं।
एक अनेक धनी विज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥५॥
नय तरंग गंगा जिनवाणी, हमें ज्ञान जल दें कल्याणी।
दिखें आज भी हंसा ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥६॥
महा मोक्ष पाने बचपन से, दुर्जय काम हरे निज बल से।
बने जितेन्द्री अंतर्यामी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥७॥
मोह रोग हर वैद्य तुम्हीं हो, मंगल कर जगबन्धु तुम्हीं हो।
साधु संत के शरणा दानी, मम नयनों में वीरा स्वामी॥८॥

(दोहा)

संस्कृत में अष्टक रचे, 'भागचंद' गुण गाएँ।
'सुव्रत' रच चौपाइयाँ, महावीर बन जाएँ॥

===

गोम्मटेश अष्टक

विसट्ट-कंदोट्ट-दलाणुयारं, सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥१॥

अच्छाय-सच्छं जलकंत गंडं, आबाहु दोलंत सुकण्ण पासं।
गइंद-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥२॥

सुकण्ठं-सोहा जियदिव्व संखं, हिमालयुद्दाम विसाल कंधं।
सुपेक्ख णिज्जायल सुट्ठमज्झं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥३॥

विंज्झाय लग्गे पविभासमाणं, सिहामणिं सव्व सुचेदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥४॥

लयासमक्कंत-महासरीरं, भव्वावलीलद्ध सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥५॥

दियंबरो जो ण च भीइ जुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सप्पादि जंतुप्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥६॥

आसां ण जो पोक्खदि सच्छदिट्ठ, सोक्खे ण बांछा हयदोसमूलं।
विराय भावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥७॥

उपाहि मुत्तं धण-धाम-वज्जियं, सुसम्मजुत्तं मय-मोहहारयं।
वस्सेय पज्जंतमुववास-जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥८॥

===

गोम्मटेश अष्टक (भावानुवाद)

(चौपाई)

नीलकमल दल जैसे नयना, चंदा जैसा मुखड़ा है ना।
नासा लख चंपा हुई पानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥१॥

नभ जल जैसे गाल चमकते, कंधों तक तो कान लटकते।
भुजा दंड गज सूँड समानी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥२॥

कंठ शंख जैसा अनुपम है, वक्ष विशाल हिमालय सम है।
कटि प्रदेश अचल अभिरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥३॥

विंध्यगिरी पर चमक रहे जो, सब चैत्यों के प्रमुख रहे जो।
जग को सुख दें चंदा स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥४॥

जिनके तन पर चढ़ी लताएँ, जिन्हें कल्पतरु भव्य बताएँ।
जिन पद में सुर भी प्रणमामि, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥५॥

जिन्हें न भय जो शुद्ध दिगम्बर, जिनके मन को रुचे न अम्बर।
सर्प आदि से कपित न स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥६॥

आश रहित समदर्शनधारी, सुख नहिं चाहें दोष निवारी।
भरत भ्रात में शल्य विरामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥७॥

तजे उपाधी समता पाए, वित्त धाम मद मोह नशाए।
किए वर्ष भर अनशन स्वामी, उन गोम्टेश को सदा नमामि॥८॥

(दोहा)

प्राकृत में अष्टक रचे, 'नेमिचन्द्र' गुण गाए।
बाहुबली के पद्य में, 'सुव्रत' गीत सुनाये॥

===

श्री छहढाला

मंगलाचरण

(दोहा)

भवसुख शिवसुख मार्ग दे, वीतराग विज्ञान।
सम्यक् सार स्वरूप को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

श्री प्रथम ढाल

चतुर्गति भ्रमण वर्णन (लघु चौपाई)

१. जीवस्थान वर्णन

अनन्त विस्तृत है आकाश, बहुमध्य में लोकाकाश।
जिसमें तीन लोक छह द्रव्य, अनन्त प्राणी भव्य अभव्य॥

२. जीव-भेद वर्णन

सिद्ध सुखी दुखमय संसार, दुख से बचने खोजें द्वार।
जिनशासन दे जिसका ज्ञान, सुनो! गुनो!! कर लो कल्याण॥

३. संसारी-जीव वर्णन

जग के मूर्तिक जीव अशुद्ध, है अनादि से कर्म विबद्ध।
पंच परावर्तन सो पाएँ, कर्मकथा प्रभु वाँच न पाएँ॥

४. जीव-यात्रा वर्णन

क्षुद्रक भवदुख नित्य निगोद, सहके पाई थावर गोद।
भू जल आग वायु प्रत्येक, दो-दो भेद वनस्पति एक॥

५. त्रस पर्याय की दुर्लभता

त्याग कर्मफल चेतन पाए, दुर्लभ मणि सम त्रस-पर्याय।
कृमि चींटी भ्रमरादि कहाए, विकलत्रय के अति दुख पाए॥

६. पंचेन्द्रिय वर्णन

ज्यों दुर्लभतर मणि संयोग, त्यों पंचेन्द्रिय भव के योग।
अमन-समन के बनें तिर्यंच, निबल-सबल के सहे प्रपंच॥

७. तिर्यंच वर्णन

क्षुधा-तृषा सह ढोए भार, छेद-भेद शीतोष्ण अपार।
सह वध-बन्धन दुख संक्लेश, मरे नरक बिल पाये क्लेश॥

८. नरक दुख वर्णन एवं मनुष्य पर्याय की दुर्लभता

जहाँ सहे दुख चार प्रकार, आयु सागरों की कर पार।
पाई मनुज योनि पर्याय, दुर्लभतम मणि ज्यों चौराह॥

९. मनुष्य गर्भ वर्णन

मिले पुण्य से माँ का गर्भ, नौ-दस माह सहे दुख दर्द।
उलटे मटके सम लटकाए, मल-मूत्रों में सिकुड़े काय॥

१०. मनुष्य पर्याय वर्णन

रोते-रोते पाया जन्म, फिर भी हो परिवार प्रसन्न॥
खेल-खेल में बचपन खोए, यौवन में युवती को रोए॥

११. निष्फल नर पर्याय

प्रौढ़ दशा में घर के भार, ढोकर हुए वृद्ध लाचार।
बिना धर्म नर रत्न गँवाए, मिले सुरों के चार निकाय॥

१२. निष्फल देव पर्याय

भोग-भोग स्वर्गों के भोग, बिन सम्यक्त्व कहाँ सुख योग।
छोड़ स्वर्ग भू-जल तरु होए, दो हजार सागर यों खोए॥

१३. भवचक्र हर्त्ता भावना

मोक्ष योग्य जब किया न बोध, तब जा पहुँचे इतर निगोद।
सो 'विद्या' 'सुव्रत' नत शीश, कु-चक्र हर-दो प्रभु आशीष॥

❑ ❑ ❑

श्री द्वितीय ढाल

मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र वर्णन

(विष्णु)

१. मिथ्यात्व वर्णन

मिथ्यादर्शन ज्ञान आचरण, ये भव-भव दुख दें।
जिन्हें समझकर सुखेच्छु त्यागें, वे कुछ हम कह दें॥
सात तत्त्व छह द्रव्य आदि की, उल्टी श्रद्धाएँ।
मिथ्यादर्शन दो प्रकार का, जिन गुरु बतलाएँ॥

२. अगृहीत मिथ्यात्व वर्णन

प्रथम भेद है अगृहीत जो, मिथ्योदय से हो।
लक्ष्यभूत जीवादि तत्त्व का, ज्ञान न जिससे हो॥
शुद्ध बुद्ध एकत्व अरूपी, जीव अनन्त गुणी।
फिर भी तन को चेतन माने, वो मिथ्यात्व गुणी॥

३. तत्त्वों की विपरीत धारणा

अभिन्न भिन्न अत्यन्त भिन्न जो, अजीव कायों को।
राग द्वेष कर अपना समझे, आस्रव भावों को॥
द्रव्य भाव नौकर्म बन्ध कर, भाव शुभाशुभ हों।
भव तन भोग हितैषी लगते, तो क्या संवर हों॥

४. ज्ञान-चारित्र की विपरीत धारणा

गजस्नानवत् किये निर्जरा, अकाम या सविपाक।
मोक्ष योग्य श्रम ना कर पाए, मिथ्याज्ञान विपाक॥
यों मिथ्या-दृग-ज्ञान आदि की, विषय कषायें जो।
मिथ्या-चारित कहलाती हैं, पाप क्रियायें वो॥

५. गृहीत मिथ्यात्व वर्णन

भेद दूसरा गृहीत मिथ्या-दर्शन अब समझो।
कुगुरु कुदेव कुधर्म शास्त्र की, श्रद्धा से यह हो॥

स्वरूप से विचलित मत वाले, गुरु सब कुगुरु रहे।
भवसागर में हमें डुबाने, पत्थर नाव कहे॥

६. गृहीत मिथ्यात्व का विशेष वर्णन

अस्त्र-शस्त्र तिय वस्त्र आदि धर, जो खुद नाथ हुए।
वे कुदेव उनके अनुयायी, दोनों जगत छुए॥
जिसमें द्रव्य भाव हिंसा की, दुखद प्रतिज्ञा हो।
वो कुधर्म जिसकी श्रद्धा से, गृहीतमिथ्या हो॥

७. गृहीत मिथ्यात्व के भेद

यों त्रय चतु पच आदि तीन सौ, त्रेसठ मत मिथ्या।
संख्य असंख्य अनन्तों भी हों, गृहीत दृग श्रद्धा॥
संशय मोह विपर्यय जिसमें, सभी दोष रहते।
गृहीत मिथ्याज्ञान वही जो, मिथ्यात्वी रचते॥

८. मिथ्यात्व त्याग भावना

माया मिथ्या निदान से जो, बिना भेद-विज्ञान।
करें कुतप वह गृहीतमिथ्या, चारित दुख की खान॥
सो मिथ्या-दृग-ज्ञान-चरण तज, सम्यक्ता पाएँ।
'विद्या' धरकर 'सुव्रत' भजकर, शुद्धात्मा ध्याएँ॥

९. कल्याण हेतु शिक्षा

(दोहा)

मिथ्या चारित ज्ञान तज, होता सम्यग्ज्ञान।
फिर सम्यक्चारित्र धर, बनें सिद्ध भगवान॥

❑ ❑ ❑

श्री तृतीय ढाल

सम्यग्दर्शन वर्णन

(विद्योदय-मात्रिक)

१. मोक्षमार्ग दर्शन

प्रज्ञावान भव्य जन जिनको, निजहित भाए।
उन्हें कुशल आचार्य गुरु जी, मोक्ष बताए॥
मोक्ष प्राप्ति पथ सम्यग्दर्शन, ज्ञान आचरण।
धर साधन व्यवहार साध्य फिर, निश्चय चेतन॥

२. चेतना के प्रकार

शुद्ध अशुद्ध चेतना दो विध, शास्त्र बताएँ।
ज्ञान चेतना शुद्ध सिद्ध वा, अर्हत पाएँ॥
ज्ञाता दृष्टा शुद्ध चेतना, परमातम हैं।
अशुद्ध चेतना दो प्रकार के, जीवातम हैं॥

३. चेतना के अन्य प्रकार

प्रथम कर्मफल थावर सब हों, मिथ्यादृष्टि।
कर्म-चेतना त्रस पाते हैं, दोनों दृष्टि॥
हर मिथ्यादृष्टि दुख सहते, हैं बहिरातम।
अन्तर आतम त्रिविध जघन्य व, मध्यम उत्तम॥

४. चेतना के स्वरूप

जघन्य मध्यम व्यवहारी जो, मिथ्या हर के।
तत्त्व स्थान नवदेव आदि पर, श्रद्धा करके॥
अविरत सम्यग्दृष्टि जघन्य, अन्तर-आतम।
देशव्रती वा प्रवृत्ति वाले, मुनि हैं मध्यम॥

५. चेतना के तीन प्रकार

पर के त्यागी शुद्ध-उपयोगी, मुनि हैं उत्तम।
सो हे! आतम तज! बहिरातम, भज! परमातम॥

अन्तर-आतम बनने चर्या, सराग धारो।
सम्यग्दर्शन त्रय प्रकार धर, चरण निखारो॥

६. सम्यग्दर्शन के साधन

शिरोधार्य जिन-आज्ञा कर लें, गुरूपासना।
छः सामान्य विशेष गुणों से, जीव समझना॥
अजीव धर्म अधर्म काल नभ, पुद्गल जग में।
पुद्गल रूपी शेष अरूपी, चतुर भंग में॥

७. द्रव्य-तत्त्व आदि वर्णन

पुद्गल जीव चलें यदि तो दे, धर्म सहारा।
अगर ठहरना चाहें ये तो, अधर्म द्वारा॥
द्रव्यों के परिणमन वर्तना, काल द्विविध है।
जो अवगाह सभी को दे वो, गगन द्विविध है॥

८. आस्रव वर्णन

दो चउ छह बीसों इक्कीसों, अठबीस आदि।
त्यागें ये पुद्गल की माया, भवदुख व्याधि॥
तज अजीव अब सत्तावन विध, आस्रव तजिए।
मिथ्याविरति-प्रमाद कषाय व, योग न धरिए॥

९. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

पाँच हेतु ये त्याग बन्ध भी, तजें चतुर्धा।
छह कारण से संवर कर तप, करें निर्जरा॥
कर्म नशा के मिले मोक्ष सों, सम्यक् करना।
प्रशम आदि शुभ सराग सम्यक् लक्षण धरना॥

१०. सम्यग्दर्शन के दोष

गुण विपरीत दोष शंकादिक, त्यागें आठों।
ज्ञान जाति कुल बल तन धन तप, मद तज आठों॥

कुगुरु कुदेव कुधर्म भक्त षट्, अनायतन तज।
देव लोक गुरु मूढ़ दोष कुल, पच्चीसों तज॥

११. सम्यग्दर्शन के चार अंग

अंग धरें निशंक ज्यों अंजन, दाएँ पग सम।
अनन्तमती सम निःकांक्षित हों, बाएँ पग सम॥
उद्दायन सम निर्विचिकित्सा, बाएँ कर सम।
अमूढ़दृष्टि रेवती जैसे, पीठ अंग सम॥

१२. सम्यग्दर्शन के शेष अंग

उपगूहन श्रेष्ठी जिनेन्द्र ज्यों, गुप्तांगों सम।
वारिषेण सम स्थितिकरण हो, दाएँ कर सम॥
हो वात्सल्य विष्णुमुनि ज्यों, वक्ष हृदय सम।
प्रभावना हो वज्रमुनि ज्यों, उच्च शीश सम॥

१३. सम्यग्दर्शन के प्रभाव

आठ अंग तन सम हों सम्यक्, व्यवहारी में।
अतः न जन्में नरक नपुंसक, पशु नारी में॥
दीन हीन कुल अल्प आयु वा, विकलांगों में।
यों अविरत हैं किन्तु जन्म लें, उच्च कुलों में॥

१४. सम्यग्दर्शन की सार्थकता

सम्यग्दर्शन प्रथम चरण हैं, मोक्षमहल के।
इस बिन सम्यग्ज्ञान चरित्रा, कभी न झलके॥
तीन चार भव में सम्यक् से, निज-हित पा लो।
सो जलने के पहले 'सुव्रत', ज्योति जला लो॥

❑ ❑ ❑

श्री चतुर्थ ढाल

ज्ञान व श्रावकचर्या वर्णन

(हाकलिका)

१ सम्यग्ज्ञान उत्पति हेतु

मिथ्यादर्शन त्याग चुके, जिनशासन स्वीकार चुके।
तो सम्यग्दर्शन होगा, सम्यग्ज्ञान तुरत होगा॥

२. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान में भेद

एक साथ दोनों होते, साधन साध्य भेद होते।
सम्यग्दर्शन है साधन, ज्ञान उसी का साध्य सदन॥

३. सम्यग्ज्ञान के प्रकार

दो प्रकार के सम्यग्ज्ञान, पहले परोक्ष मति श्रुत ज्ञान।
इन्द्रिय मन से ज्ञान कराए, सकल द्रव्य की कुछ पर्याय॥

४. प्रत्यक्षज्ञान के भेद

विकल सकल दो विध प्रत्यक्ष, अवधि मनः विकला प्रत्यक्ष।
प्रत्यक्ष चेतना से मानें, कुछ रूपी सीमित जानें॥

५. ज्ञान के प्रकार

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय, होते क्षायोपशमिक सदय।
क्षायिक केवलज्ञान अमल, निरावरण प्रत्यक्ष सकल॥

६. केवलज्ञान की विशेषताएँ

ज्ञानावरणी जब सब जाए, तभी अनन्तानन्त कहाए।
अनन्त द्रव्य के गुण पर्याय, युग पद जाने लख असहाय॥

७. केवलज्ञान प्रभाव

दर्पण गोखुर बिम्बित ज्यों, लोकालोक झलकते यों।
शीघ्र मोक्ष का अधिकारी, जग में है महिमा न्यारी॥

८. ज्ञान अभ्यास हेतु प्रेरणा

अतः ज्ञान अभ्यास करो, आठ अंग में हृदय धरो।
उच्चारण हो शुद्ध भला, शब्दाचार अंग पहला॥

९. ज्ञान-अंग वर्णन

शास्त्र अर्थ सम्यक् करना, अर्थाचार क्रमिक करना।
पढ़कर सही अर्थ करना, उभयाचार चित्त धरना॥

१०. ज्ञान-अंग वर्णन

योग्य समय स्वाध्याय करें, इसको कालाचार कहें।
शास्त्र विनय करके पढ़ना, विनयाचार इसे कहना॥

११. ज्ञान के अंग

करें त्याग कुछ शास्त्र पढ़ें, ये उपधानाचार कहें।
गुरु श्रुत का बहुमान करें, यह बहुमानाचार धरें॥

१२. ज्ञान के अंग

गुरु श्रुत का ना नाम छिपे, वो अनिह्नवाचार रहे।
ज्ञान अंग ये आठ रहे, बिन संयम दुखभार रहे॥

१३. ज्ञान प्राप्ति हेतु आवश्यक

सो सम्यक्त्वाचरण करो, कुलाचार धर व्यसन हरो।
पाक्षिक श्रावक स्वीकारो, आठ मूलगुण फिर धारो॥

१४. चारित्र बिना ज्ञान की असमर्थता

केवलज्ञान मनःपर्यय, बिन चारित्र न हुए उदय।
सो दो विध धर सकल-विकल, गृहियों का चारित्र विकल॥

१५. नैष्टिक श्रावक का वर्णन

अणु-गुण-शिक्षा व्रत के दल, एकदेश-अणुव्रत मंगल।
अणुव्रत पाँच शीलव्रत सात, बारह व्रत नैष्ठिक के साथ॥

१६. अहिंसा अणुव्रत का वर्णन

त्रस हिंसा नव कोटि से, जहाँ तजें भव भीति से।
थावर हिंसा सीमित हो, प्रथम अहिंसा अणुव्रत वो॥

१७. सत्य अणुव्रत वर्णन

स्थूल झूठ ना खुद बोलें, ना बुलवाने मुख खोलें।
विपद सत्य प्रतिबन्धित हो, सत्य दूसरा अणुव्रत वो॥

१८. अचौर्य अणुव्रत वर्णन

रखी गिरी भूली वस्तु, बिना दान दी पर वस्तु।
खुद ना लें ना दें पर को, है अचौर्य अणुव्रत वो॥

१९. ब्रह्मचर्य अणुव्रत का स्वरूप

पर-नारी के निकट कभी, ना भेजें ना जाएँ कभी।
निज-नारी तक सीमित हो, ब्रह्मचर्य का अणुव्रत वो॥

२०.परिग्रह परिमाण अणुव्रत स्वरूप

धन धान्यादिक दस परिग्रह, कर सीमित बहु ना संग्रह।
इच्छा-मूर्च्छा सीमित हो, परिग्रह परिमाण अणुव्रत वो॥

२१. गुणव्रत का स्वरूप

अणुव्रत का जो उपकारी, गुणव्रत तीन भेद धारी।
गुणव्रत में दिग्व्रत पहला, दिशा सीम कर बाह्य न जा॥

२२. देशव्रत, अनर्थदण्डव्रत का स्वरूप

उसमें काल क्षेत्र कम कर, धरें देशव्रत जीवन भर।
बिना प्रयोजन कर्म तजें, अनर्थदण्ड व्रत पाँच गहें॥

२३. शिक्षा व्रत का स्वरूप

मुनिव्रत की शिक्षा दें जो, चार तरह शिक्षाव्रत वो।
पहला सामायिक करना, पाप त्याग समता धरना॥

२४. प्रौषध-भोग-उपभोग स्वरूप

पर्व अष्टमी चौदस को, प्रौषध का उपवास करो।
भले रहे आवश्यकतम, करें भोग उपभोग नियम॥

२५. अतिथिसंविभाग व्रत स्वरूप व अतिचार

मुनि की पूर्ण व्यवस्था कर, अतिथिसंविभाग व्रत धर।
पाँच-पाँच तज व्रत-अतिचार, अंत समय सल्लेखन धार॥

२६. साधक श्रावक स्वरूप

साधक श्रावक बनकर के, करना समाधि व्रत धर के।
सोलहवें तक स्वर्ग सिधार, स्वर्ग त्याग हों नर अनगार॥

२७. मुनि से मोक्ष स्वरूप

मुनि अरिहन्त जिनेन्द्र बनें, समवसरण से धर्म कहें।
ध्यान लगा निर्वाण गहें, सो 'सुव्रत' मुनि धर्म कहें॥

❑ ❑ ❑

श्री पंचम ढाल

बारह भावना

(दोहा)

१. अनित्य भावना

रिश्ते नाते सम्पदा, तन बल भोग अपार।
हैं अनित्य सब कुछ यहाँ, क्षणभंगुर संसार॥

२. अशरण भावना

कौन बचाए मृत्यु से, हवा दवा विज्ञान।
इस अशरण संसार में, शरण भेद विज्ञान॥

३. संसार भावना

देव नारकी नर पशु, सब भोगें दुख भोग।
मोक्ष बिना संसार में, कहीं न सुख संयोग॥

४. एकत्व भावना

नहीं किसी के हम यहाँ, कोई न अपना यार।
यह एकत्व विचार के, आत्म-तत्त्व ही सार॥

५. अन्यत्व भावना

जब तन भी अपना नहीं, फिर क्यों करते पाप।
यम के आगे ना चले, कुछ अन्यत्व विलाप॥

६. अशुचि भावना

मल-मूत्रों की देह दे, सूतक-पातक शोर।
दीक्षा बिन सब व्यर्थ है, अशुचि देह की डोर॥

७. आस्त्रव भावना

सत्तावन विध से रचें, हम अपना संसार।
कर्मास्त्रव को रोक के, होगी नैया पार॥

८. संवर भावना

जीवन-रथ पर सारथी, संवर हुआ सवार।
गजरथ से आतम गयी, मोक्षपुरी के द्वार॥

९. निर्जरा भावना

कर्म-कालिमा ने दिया, निज का रूप विगार।
तप-उबटन की निर्जरा, करे आत्म शृंगार॥

१०. लोक भावना

स्वयं सिद्ध नर रूप सम, लोक रहा भ्रम जाल।
इसमें भटकें जीव सब, धर्म बिना बेहाल॥

११. बोधिदुर्लभ भावना

दुर्लभ सम्यग्दर्श है, दुर्लभ सम्यग्ज्ञान।
दुर्लभ मुनि चारित्र सो, तजें मोह अज्ञान॥

१२. धर्म भावना

दुख दें मिथ्यामत सभी, लगते धर्म समान।
धर्म मात्र जिनधर्म है, भक्त करे भगवान॥

१३. उपसंहार

भाकर बारह भावना, होता दृढ़ वैराग्य।
'सुव्रत' देवर्षि बनें, करें मुक्ति से राग॥

❑ ❑ ❑

श्री षष्टम ढाल

मुनिचर्या वर्णन

(ज्ञानोदय)

१. मोक्षमार्ग स्वरूप

है संसार असुख तो सुख क्या, कहाँ मिले किस साधन से।
भव्य जीव की यह जिज्ञासा, शांत हुई गुरु भगवन से॥
सुख है मोक्ष मिले निज में जो, मोक्षमार्ग के साधन से।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्रा, मोक्षमार्ग बनता इनसे॥

२. सकल चारित्र वर्णन

सम्यग्दर्शन दो प्रकार का, साधन प्रथम सराग हुआ।
साध्य दूसरा वीतराग जो, मुनिव्रत धरकर सिद्ध हुआ॥
सो सराग सम्यग्दर्शन धर, वीतराग का यत्न करो।
धरो सकल चारित्र महाव्रत, मुनि बनकर शिव साध्य वरो॥

३. मुनि मूलगुण वर्णन

धारो अट्ठाईस मूलगुण, जिनमें पाँच महाव्रत हैं।
पाँच समिति इन्द्रिय जय पाँचों, सात शेष आवश्यक छै॥
द्रव्य भाव सब हिंसा तजना, प्रथम अहिंसा महाव्रत है।
दुखद सत्य हर झूठ त्यागना, दूजा सत्य महाव्रत है॥

४ . महाव्रत वर्णन

बिन दी वस्तु कभी न लेना, तीजा अचौर्य महाव्रत है।
नव कोटि से स्त्री तजना, ब्रह्मचर्य ये महाव्रत है॥
मोह संग-उपकरण त्यागना, परिग्रह त्याग महाव्रत है।
चार हाथ भू अग्र देखकर, दिन में गति ईर्यापथ है॥

५ . समिति वर्णन

हित-मित आगम सहित बोलना, सुखकर भाषा समिति यही।
बोधि हेतु आहार शुद्धि ही, शुद्ध ऐषणा समिति रही॥
लें रक्खें उपकरण देखकर, आदान निक्षेपण समिति।
दोष रहित मल मूत्र आदि का, त्याग रहा व्युत्सर्ग समिति॥

६ . पंचेन्द्रिय-जय व आवश्यक

स्पर्श श्रोत्र रस चक्षु नासिका, ये पंचेन्द्रिय जय करना।
समता धर सामायिक करके, चौबीसी की थुति करना॥
करें वन्दना प्रतिक्रमण फिर, स्वामी प्रत्याख्यान करें।
कायोत्सर्ग करें मूर्छा तज, षट्-आवश्यक रोज करें॥

७ . शेष मूलगुण वर्णन

केशलोंच अस्नान नग्नता, थिति-भोजन क्षिति-शयन करें।
अदन्तधावन एक भुक्ति ये, सात शेष गुण ग्रहण करें॥
जैनधर्म के पता-पताका, चलते-फिरते तीर्थ-मुनि।
धारें तप दस धर्म भावना, बाईस परिषह सहें मुनि॥

८ . तेरह प्रकार चरित्र वर्णन

तेरहविध-चारित्र धार ज्यों, ध्यान गुप्ति आसीन हुए।
षट्-कारक के भेद मिटे त्यों, शुद्ध बुद्ध निज लीन हुए॥
वीतराग सम्यग्दर्शन ये, रहा शुद्ध उपयोग यही।
यही स्वरूपाचरण-चरित्रा, निश्चय रत्नत्रय है यही॥

९ . शुद्धोपयोग के स्वामी वर्णन

कायोत्सर्ग दशा निर्वृत्ति, में मुनियों को सम्भव ये।
वस्त्रधारि को कभी न होता, अतुलनीय आतम-सुख ये॥
मुनिमुद्रा का दर्शन दुर्लभ, भव्य जीव को धन्य करे।
अभव्य जीवों को प्रभु जैसा, कहाँ मिले कब धन्य करे॥

१०. शुद्धोपयोग का प्रभाव

यों एकत्व-विभक्त आतमा, ज्ञाता-दृष्टा गुण-श्रेणी।
नय निश्चय व्यवहार पक्ष बिन, ध्याकर चढें क्षपकश्रेणी॥
घाति हरण कर बने केवली, समवसरण अरिहन्त हुए।
दिव्यध्वनि दे तीर्थ प्रवर्तन, करके सिद्ध महन्त हुए॥

११ . सिद्ध स्वरूप वर्णन

सिद्धों का क्या कहना भैया, अनुपम गति ध्रुव अचल रहे।
भव-शव-यात्रा विफल बनाकर, शिवयात्रा में सफल रहे॥
रहें अनन्तानन्त काल तक, प्रभु लोकाग्र शिखर धामी।
त्रय जग में संहार मचे पर, टस से मस ना हों स्वामी॥

१२ . मनुष्य पर्याय की सार्थकता

नर-पर्याय धन्यकर डाली, धन्य चार पुरुषार्थ किए।
पंच परावर्तन दुख त्यागे, सार्थक निज परमार्थ किए॥
अनादि के मिथ्यादर्शन वा, मिथ्याज्ञान चरित तज के।
भेदाभेद धार रत्नत्रय, मोक्ष गये आतम भज के॥

१३. लेखक की अंतिम धर्मभावना

हमको पंचमकाल मिला तो, मोक्ष योग्य श्रम कर ना सकें।
किन्तु महाव्रत अणुव्रत धरके, दुर्गति से तो बच हि सकें॥
इतना भी यदि करन सकें तो, सम्यग्दर्शन प्राप्त करें।
फिर 'विद्या' के 'सुव्रत' बनकर, भव का भ्रमण समाप्त करें॥

प्रशस्ति

(दोहा)

कोरोना के काल में, याद किए गुरु मंत्र।
लिखा जिनागम रूप में, श्री छहढाला ग्रन्थ॥१॥
अल्पबुद्धि छद्मस्थ मैं, श्रुत सिद्धान्त अपार।
कमियाँ अतः सुधार के, शुद्ध पढें हों पार॥२॥
स्वतंत्रता दिवस शिवपुरी, शनि दो हजार बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥३॥

❑ ❑ ❑

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं-२,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥
सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥१॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥२॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥३॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥४॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख-ती।
राजा श्रेयांस-सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥५॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥६॥

THE NINE FINE GOD WORSHIP

Foundation (Couplet)

Jain fan find to, nine fine God
Now quick start we, worshipping method.

O! Nine fine god we want to do your worship so we respectfully invite you to please come here... come here...! please sit here... sit here...! please stay in our heart. (Flower offering)

(Quatrain)

Water washes outer body,
inter we have soul some dirty.
But we want the soul divine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our birth-death cycle so we worship you by pure water .

Burning fire everywhere,
nothing peacefull life here.
But we want peacefull time,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our whole anger cycle so we worship you by pure sandal.

Competition is very lengthy,
how to face it faith not healthy.
Please stop this emotional crime,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our this world cycle so we worship you by pure unbroken rices.

Everybody servant of body,
nobody become boss of body.
But we don't want this world wine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our celibacy character for life so we worship you by pure flowers.

Universal truth is diet,
how to defeat this hunger fight.
But we don't want food poison,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our hunger disease so we worship you by pure food items.

Dark heart but lighted body,
this is way of sorrow melody.
Please give us your spirit shine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our ignorance cycle so we worship you by pure lamp.

Karma king is boss of gambler,
who comes in this world sin counsler.
But we want your victory sign,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our karma cycle so we worship you by pure incense (dhoop).

Bad work give outcome wrong,
best work give outcome long.
Please give us your platinum coin,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our bliss so we worship you by pure fruits .

Good-good things of pure collection,
we want admission your section
Please give me your entry line,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our priceless status so we worship you by mix things .

BAY OF THE NINE FINE GOD

(couplet)

God has full purity, infinite virtues
Faithfully accept it , faithless confuse

(lion move)

1. The first god lord Shri ARIHANTA half pure,
Donate all fans path pure and sure.
2. Second god lord Shri SIDDHA got soul,
They distribute gold goal left world role.
3. AACHARYA god lord great saints of jains,
They give the vows who closed our sins rains.
4. Dispatch UPADHYAY god light religions,
We take that long life light decision.
5. The fifth god lord JAIN'S MONKS saints head,
To get pure soul the pickup skyclad.
6. Jainism is the bliss way called JIN DHARMA,
Jainism principles written volume JIN AAGAMA.
7. Statues of the jain god called JIN CHAITYA,
The temple of the jain gods called JINALAYA.
8. We pray to nine god gain your devotees,
Give the excellence path right gravities.
9. So we want come to your happy- happy home,
Give the happy - happiness 'SUVRAT' wants 'om'.

(couplet)

Nine fine god give, right - right knowledge.
Every - every worshipper, dedicated age.

O! Nine fine god we praise bay of worship you to be dedicated complite mix things . (Flower offring)